नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 141
दि. 23.02.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

‘तेलंगाना बना कांग्रेस का एटीएम?’ बयान से भड़की सियासत और जवाबदेही की जंग

जीएनएस)। तेलंगाना की राजनीति एक बार फिर तीखे आरोप–प्रत्यारोप के दौर में प्रवेश कर चुकी है। राज्य के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के एक बयान ने न केवल विपक्ष को हमलावर बना दिया है, बल्कि शासन की प्राथमिकताओं और राजनीतिक निष्ठा की सीमाओं पर भी व्यापक बहस छेड़ दी है। एक सार्वजनिक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि यदि कभी गांधी परिवार आर्थिक संकट में हो तो तेलंगाना कांग्रेस के कार्यकर्ता 1,000 करोड़ ही नहीं, 10,000 करोड़ रुपये तक जुटाने की क्षमता रखते हैं। इस कथन ने राजनीतिक विमर्श को अचानक नैतिकता, पारदर्शिता और सार्वजनिक धन की जवाबदेही की दिशा में मोड़ दिया है। मुख्यमंत्री का तर्क भावनात्मक था। उन्होंने कहा कि जिनकी तीन पीढ़ियों ने देश के लिए बलिदान दिया, उनके लिए धन का क्या महत्व है और कांग्रेस तथा देश को अलग नहीं किया जा सकता। यह वक्तव्य कांग्रेस की विचारधारा और गांधी परिवार के प्रति निष्ठा का प्रदर्शन माना जा सकता है, किंतु विपक्ष ने इसे राज्य संसाधनों की प्राथमिकताओं से जोड़ते हुए गंभीर सवाल खड़े किए हैं। भारतीय जनता पार्टी ने इसे सीधे-सीधे “तेलंगाना को कांग्रेस का एटीएम बनाने” की मानसिकता करार दिया। भाजपा नेताओं का कहना है कि जब राज्य में बेरोजगार युवा भर्ती प्रक्रियाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, किसान भुगतान में देरी से जूझ रहे हैं और बुनियादी ढांचे की चुनौतियां मौजूद हैं, तब मुख्यमंत्री का ऐसा बयान जनता की अपेक्षाओं के विपरीत संदेश देता है।

भाजपा की ओर से आई प्रतिक्रिया में यह भी पूछा गया कि क्या राज्य का राजस्व किसी परिवार विशेष की सेवा के लिए है या आम नागरिकों के कल्याण के लिए। इस आलोचना का केंद्र बिंदु यही है कि राजनीतिक निष्ठा और सरकारी जिम्मेदारी के बीच स्पष्ट रेखा होनी चाहिए। विपक्ष का तर्क है कि मुख्यमंत्री का पद केवल पार्टी कार्यकर्ताओं का नेतृत्व करने का नहीं, बल्कि पूरे राज्य का प्रतिनिधित्व करने का दायित्व है। ऐसे में शब्दों का चयन अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए, क्योंकि वे शासन की

प्राथमिकताओं का संकेत देते हैं।

पूर्व सत्ताधारी दल भारत राष्ट्र समिति ने भी इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया। पार्टी प्रवक्ताओं ने कहा कि यह बयान कांग्रेस की केंद्रीय नेतृत्व पर निर्भरता और राज्य इकाई की स्वायत्तता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। उनका आरोप है कि तेलंगाना को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का वित्तीय स्रोत समझा जा रहा है। बीआरएस ने यह भी कहा कि राज्य की जनता ने सरकार को विकास, रोजगार और सामाजिक न्याय के एजेंडे पर चुना है, न कि किसी राष्ट्रीय परिवार के प्रति आर्थिक प्रतिबद्धता जताने के लिए।

विवाद का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि मुख्यमंत्री ने अपने भाषण में केंद्र सरकार और भाजपा पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और सोनिया गांधी की छवि खराब करने के लिए राजनीतिक साजिशें रची जाती हैं और उन्हें झूठे मामलों में फंसाने की कोशिश होती है। इस टिप्पणी ने बहस को और तीखा बना दिया, क्योंकि अब मुद्दा केवल धन जुटाने की क्षमता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और वैचारिक टकराव तक फैल गया है। कांग्रेस का कहना है कि मुख्यमंत्री का आशय केवल कार्यकर्ताओं की निष्ठा और संगठन की ताकत दिखाने का था, जबकि विपक्ष इसे शासन और पार्टी के बीच की रेखा धुंधली करने वाला बयान बता रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि प्रतीकों का है। भारतीय राजनीति में गांधी परिवार का ऐतिहासिक स्थान निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण रहा है, किंतु समकालीन राजनीति में पारदर्शिता और जवाबदेही की अपेक्षाएं पहले से कहीं अधिक बढ़ चुकी हैं। ऐसे में किसी भी प्रकार की वित्तीय टिप्पणी तुरंत सार्वजनिक विमर्श का विषय बन जाती है। सोशल मीडिया के दौर में बयान क्षण भर में वायरल हो जाते हैं और उनका अर्थ-ग्रहण विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जाता है। मुख्यमंत्री का वक्तव्य भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है।

तेलंगाना एक अपेक्षाकृत युवा राज्य है, जिसकी पहचान विकास, आईटी उद्योग और शहरीकरण की गति से जुड़ी रही है। यहां की जनता रोजगार, निवेश और सामाजिक कल्याण की योजनाओं को लेकर सजग है। इसलिए राजनीतिक बयानबाजी का सीधा असर जनधारणा पर पड़ता है। विपक्ष ने इस बयान को युवाओं और किसानों की समस्याओं से ध्यान भटकाने की कोशिश बताया है। उनका कहना है कि सरकार को अपने प्रदर्शन के आधार पर जवाब देना चाहिए, न कि भावनात्मक अपीलों के माध्यम से समर्थन जुटाने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरी ओर कांग्रेस समर्थक यह तर्क दे रहे हैं कि राजनीतिक दलों में नेतृत्व के प्रति सम्मान और प्रतिबद्धता व्यक्त करना असामान्य नहीं है। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री ने कहीं भी सरकारी धन को निजी उपयोग के लिए देने की बात नहीं की, बल्कि कार्यकर्ताओं की सामूहिक क्षमता का उल्लेख किया। वे इसे एक प्रतीकात्मक वक्तव्य बताते हैं, जिसे विपक्ष ने जानबूझकर विवादित बना दिया। कांग्रेस का दावा है कि भाजपा और बीआरएस मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए इस बयान को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रहे हैं।

फिर भी, यह तथ्य अनदेखा नहीं किया जा सकता कि सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्तियों के शब्दों का प्रभाव व्यापक होता है। लोकतंत्र में विश्वास का आधार पारदर्शिता और उत्तरदायित्व है। यदि किसी बयान से यह संदेश जाए कि राज्य की प्राथमिकताएं किसी राजनीतिक परिवार से जुड़ी हैं, तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठेंगे। यही कारण है कि यह मुद्दा केवल एक भाषण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि राज्य की राजनीतिक दिशा पर चर्चा का केंद्र बन गया है।

आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या यह विवाद विधानसभा के भीतर भी गूंजेगा और क्या सरकार इस पर कोई स्पष्टीकरण देगी। विपक्ष संभवतः इसे जनसभाओं और मीडिया के माध्यम से बड़ा मुद्दा बनाए रखेगा, जबकि कांग्रेस इसे संगठनात्मक निष्ठा का उदाहरण बताकर बचाव करेगी। चुनावी राजनीति में ऐसे बयान अक्सर दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ते हैं, क्योंकि वे नेतृत्व की प्राथमिकताओं की झलक देते हैं।

अंततः यह विवाद हमें यह याद दिलाता है कि लोकतांत्रिक राजनीति में शब्द केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी हैं। मुख्यमंत्री का बयान समर्थकों के लिए निष्ठा का प्रतीक हो सकता है, किंतु आलोचकों के लिए यह शासन और पार्टी के बीच संतुलन का प्रश्न है। तेलंगाना की जनता के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यही रहेगा कि सरकार उनकी अपेक्षाओं पर कितनी खरी उतरती है और विकास, रोजगार तथा सामाजिक न्याय के वादों को किस हद तक पूरा करती है। राजनीतिक बयानबाजी समय के साथ फीकी पड़ सकती है, लेकिन शासन का आकलन अंततः काम के आधार पर ही होगा।

विपक्षी एकता की नई बहस: INDIA गठबंधन के नेतृत्व पर मणि शंकर अय्यर का संकेत

जीएनएस)। देश की विपक्षी राजनीति में एक बार फिर नेतृत्व को लेकर चर्चा तेज हो गई है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मणि शंकर अय्यर ने INDIA गठबंधन के नेतृत्व पर टिप्पणी करते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को “केंद्रीय चेहरा” बताया है। उनके इस बयान ने न केवल कांग्रेस बल्कि पूरे विपक्षी खेमे में नई बहस को जन्म दे दिया है कि 2024 के बाद भी यदि विपक्ष को एकजुट रहना है तो उसका नेतृत्व किसके हाथों में होना चाहिए।

अय्यर का कहना है कि ममता बनर्जी के बिना INDIA गठबंधन की एकजुटता प्रभावित हो सकती है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि क्षेत्रीय दलों के कई नेता ऐसे हैं जो गठबंधन की कमान संभालने की क्षमता रखते हैं। उनका यह बयान उस समय आया है जब विपक्षी दल भाजपा के खिलाफ साझा रणनीति बनाने की कोशिश में लगे हैं। INDIA गठबंधन, जिसका उद्देश्य केंद्र में सत्तारूढ़ दल के मुकाबले एक व्यापक मंच तैयार करना है, कई विचारधाराओं और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का संगम है। ऐसे में नेतृत्व का प्रश्न स्वाभाविक रूप से जटिल हो जाता है।

मणि शंकर अय्यर ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को भी सलाह दी कि वे नेतृत्व की भूमिका पर जोर देने के बजाय सहयोगी दलों के नेताओं को आगे आने दें। उन्होंने उदाहरण देते हुए तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन, समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव और बिहार के नेता तेजस्वी यादव का नाम लिया। अय्यर का तर्क है कि क्षेत्रीय दलों की जमीनी पकड़ और राज्यों में उनकी मजबूत उपस्थिति विपक्षी एकता को मजबूती दे सकती है।

उनकी टिप्पणी, “ममता दी के बिना INDIA गठबंधन का ‘I’, ‘N’, ‘D’, ‘I’, ‘A’ ही खत्म हो जाएगा,” प्रतीकात्मक जरूर है, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से काफी अर्थपूर्ण मानी जा रही है। यह बयान इस ओर संकेत करता है कि अय्यर विपक्षी राजनीति में एक सामूहिक नेतृत्व मॉडल को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिसमें कांग्रेस की भूमिका महत्वपूर्ण हो, लेकिन वर्चस्ववादी न हो। यह विचार उस पुरानी बहस को फिर से सामने लाता है कि क्या कांग्रेस को विपक्ष का स्वाभाविक नेता माना जाना चाहिए या बदलते राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय दलों को अधिक केंद्रीय भूमिका मिलनी चाहिए।

ममता बनर्जी को केंद्रीय चेहरा बताने के पीछे कई राजनीतिक कारण देखे जा रहे हैं। पश्चिम बंगाल में उनकी लगातार चुनावी सफलताएं, भाजपा के खिलाफ आक्रामक रुख और राष्ट्रीय मुद्दों पर स्पष्ट आवाज ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत नेता के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने समय-समय पर विपक्षी दलों को एक मंच पर लाने की पहल भी की है। हालांकि, गठबंधन की राजनीति में केवल लोकप्रियता ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि सहमति और संतुलन भी आवश्यक होता है।

अय्यर के बयान से कांग्रेस के भीतर भी अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आ सकती हैं। कांग्रेस लंबे समय तक राष्ट्रीय राजनीति की धुरी रही है और उसके लिए नेतृत्व का प्रश्न संवेदनशील है। राहुल गांधी ने हाल के वर्षों में संगठनात्मक पुनर्गठन और वैचारिक संघर्ष के माध्यम से पार्टी को सक्रिय बनाए रखने की कोशिश की है। ऐसे में यदि सहयोगी दलों को आगे बढ़ाने की बात होती है, तो यह कांग्रेस की रणनीति में बदलाव का संकेत हो सकता है। हालांकि, यह भी संभव है कि इसे गठबंधन धर्म के तहत एक व्यावहारिक सुझाव के रूप में देखा जाए। INDIA गठबंधन की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि इसमें विभिन्न राजनीतिक पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय हित और वैचारिक विविधताएं शामिल हैं। तमिलनाडु से लेकर पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश से लेकर बिहार तक, हर राज्य की राजनीतिक परिस्थितियां अलग हैं। ऐसे में एक सर्वमान्य नेता का चयन आसान नहीं है। अय्यर का बयान इस दिशा में एक विचार प्रस्तुत करता है कि नेतृत्व साझा हो सकता है और अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग चेहरे प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विपक्षी गठबंधन की सफलता केवल नेतृत्व के नाम पर निर्भर नहीं करेगी, बल्कि साझा एजेंडा, नीति स्पष्टता और जमीनी समन्वय पर भी निर्भर करेगी। यदि गठबंधन के भीतर आपसी विश्वास और संवाद मजबूत रहता है, तो नेतृत्व का प्रश्न स्वतः संतुलित हो सकता है। लेकिन यदि मतभेद उभरते हैं, तो यही मुद्दा अस्थिरता का कारण बन सकता है।

अय्यर की टिप्पणी ऐसे समय आई है जब राष्ट्रीय राजनीति में गठबंधन की संभावनाओं और सीमाओं पर लगातार चर्चा हो रही है। भाजपा के मजबूत संगठन और केंद्रीकृत नेतृत्व के मुकाबले विपक्ष को एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करना होगा। क्या वह मॉडल सामूहिक नेतृत्व का होगा या किसी एक केंद्रीय चेहरे का, यह आने वाले समय में स्पष्ट होगा। फिलहाल, मणि शंकर अय्यर के बयान ने इस बहस को फिर से जीवंत कर दिया है और विपक्षी राजनीति के भीतर रणनीतिक मंथन की प्रक्रिया को तेज कर दिया है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि कांग्रेस और अन्य सहयोगी दल इस टिप्पणी पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। क्या इसे व्यक्तिगत राय मानकर नजरअंदाज किया जाएगा या यह व्यापक रणनीतिक विमर्श का हिस्सा बनेगा? इतना तय है कि विपक्षी एकता की राह आसान नहीं है, और नेतृत्व का सवाल उसमें केंद्रीय भूमिका निभाता रहेगा। लोकतांत्रिक राजनीति में गठबंधन केवल गणित का खेल नहीं होता, बल्कि रसायन भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। INDIA गठबंधन के सामने अब यही चुनौती है कि वह इस रसायन को कैसे संतुलित रखता है और साझा लक्ष्य की दिशा में कैसे आगे बढ़ता है।

बढ़ती महंगाई, सख्त नीतियां और घटता भरोसा अमेरिकी जनता में ट्रंप के नेतृत्व पर गहराता असंतोष

जीएनएस)। अमेरिका की राजनीति में एक बार फिर नेतृत्व, नीतियों और जनविश्वास को लेकर गंभीर बहस शुरू हो गई है। हाल ही में एबीसी न्यूज–वॉशिंगटन पोस्ट और इप्सोस द्वारा किए गए एक संयुक्त सर्वे ने ऐसे आंकड़े सामने रखे हैं, जिन्होंने राजनीतिक विश्लेषकों, नीति निर्माताओं और आम जनता को सोचने पर मजबूर कर दिया है। इस सर्वे के अनुसार, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आर्थिक, विदेश और इमिग्रेशन नीतियों को लेकर व्यापक असंतोष देखने को मिल रहा है। महंगाई से लेकर विदेश नीति तक, अधिकांश अमेरिकियों ने उनकी कार्यशैली पर असहमति जताई है, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि जनता के बीच नेतृत्व को लेकर विश्वास की स्थिति पहले जैसी मजबूत नहीं रही।

महंगाई अमेरिकी जनता के लिए सबसे संवेदनशील मुद्दा बन चुकी है। सर्वे में करीब दो-तिहाई लोगों ने कहा कि वे महंगाई से निपटने के तरीके से संतुष्ट नहीं हैं। यह असंतोष केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि आम लोगों के दैनिक जीवन में महसूस किया जा रहा है। किराने का सामान, ईंधन, स्वास्थ्य सेवाएं और आवास जैसी आवश्यक चीजों की बढ़ती कीमतों ने मध्यम और निम्न आय वर्ग के लोगों पर विशेष दबाव डाला है। आर्थिक अस्थिरता का यह अनुभव लोगों के मन में यह प्रश्न

पैदा कर रहा है कि क्या सरकार ने समय रहते सही नीतिगत कदम उठाए थे या नहीं। जब लोगों को लगता है कि उनकी आय और खर्च के बीच संतुलन बिगड़ रहा है, तो स्वाभाविक रूप से उनका विश्वास नेतृत्व से कमजोर होने लगता है।

विदेशी सामानों पर लगाए गए टैरिफ भी असंतोष का एक बड़ा कारण बने हैं। सर्वे के अनुसार, 60 प्रतिशत से अधिक लोगों ने इन टैरिफ का विरोध किया है। टैरिफ का उद्देश्य घरेलू उद्योगों को सुरक्षा देना और विदेशी प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करना होता है, लेकिन इसका प्रभाव उपभोक्ताओं पर कीमतों के रूप में पड़ता है। जब आयातित वस्तुएं महंगी हो जाती हैं, तो इसका सीधा असर बाजार की कीमतों पर पड़ता है। इससे उपभोक्ताओं को अधिक भुगतान करना पड़ता है, जिससे आर्थिक दबाव और बढ़ जाता है। इस स्थिति ने लोगों के बीच यह धारणा पैदा की है कि व्यापारिक नीतियों का संतुलन सही तरीके से नहीं बनाया गया।

विदेश नीति के क्षेत्र में भी असंतोष स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। सर्वे में 62 प्रतिशत लोगों ने विदेश नीति को लेकर असहमति जताई। अमेरिका एक वैश्विक शक्ति है और उसकी विदेश नीति का प्रभाव केवल अंतरराष्ट्रीय संबंधों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि घरेलू अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और वैश्विक प्रतिष्ठा पर भी पड़ता है। जब जनता को लगता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की स्थिति कमजोर हो रही है या संबंधों में तनाव बढ़ रहा है, तो यह उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। विदेश नीति में संतुलन और स्थिरता जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक होती है।

इमिग्रेशन नीति भी एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद विषय रहा है। सर्वे में 58 प्रतिशत लोगों ने इमिग्रेशन नीति से असंतोष जताया। अमेरिका लंबे समय से प्रवासियों का देश रहा है, और यहां की अर्थव्यवस्था और समाज में प्रवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सख्त इमिग्रेशन नीतियों ने जहां कुछ लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से संतोष दिया, वहीं कई लोगों को यह नीति कठोर और असंवेदनशील लगी। इस मुद्दे पर देश के भीतर गहरी वैचारिक विभाजन की स्थिति बनी हुई है, जो राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा सकती है।

अर्थव्यवस्था के व्यापक प्रबंधन को लेकर भी जनता के बीच मिश्रित लेकिन चिंताजनक संकेत मिले हैं। सर्वे में 57 प्रतिशत लोगों का मानना है कि अर्थव्यवस्था को बेहतर ढंग से संभाला जा सकता था। लगभग आधे प्रतिभागियों ने कहा कि आर्थिक हालात पहले से खराब हुए हैं, जबकि केवल एक-तिहाई ने सुधार महसूस किया। यह आंकड़ा इस बात का संकेत है कि आर्थिक विकास के आंकड़े और आम जनता का अनुभव हमेशा एक जैसे नहीं होते। यदि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुंचते, तो असंतोष बढ़ना स्वाभाविक है। सर्वे में यह भी सामने आया कि रिपब्लिकन पार्टी के भीतर भी मतभेद उभर रहे हैं। ‘MAGA’ अभियान से जुड़े समर्थक अभी भी ट्रंप के प्रति मजबूत समर्थन रखते हैं, लेकिन पार्टी के अन्य वर्गों में आलोचना बढ़ रही है। यह स्थिति किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनौतीपूर्ण होती है, क्योंकि आंतरिक एकता नेतृत्व की ताकत का महत्वपूर्ण आधार होती है। जब पार्टी के भीतर ही मतभेद बढ़ने लगते हैं, तो इसका असर चुनावी रणनीति और जनसमर्थन दोनों पर पड़ सकता है।

एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि जनता का असंतोष केवल एक नेता तक सीमित नहीं है।

सूरत : अलथान में श्री श्याम भक्तों की भव्य निशान यात्रा, 108 ध्वज अर्पित

जीएनएस)। सूरत के अलथान क्षेत्र में रविवार, 22 फरवरी का दिन भक्ति, आस्था और आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर रहा, जब श्री श्याम सिम्फ़नी परिवार के तत्वावधान में भव्य निशान यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा केवल एक धार्मिक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि श्रद्धा, विश्वास और सामूहिक एकता का जीवंत प्रतीक बनकर सामने आई। रघुवीर सिम्फ़नी परिसर से प्रारंभ हुई इस निशान यात्रा में 108 पवित्र ध्वजों के साथ हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया और बाबा श्याम के प्रति अपनी अटूट भक्ति को साकार रूप दिया।

सुबह से ही रघुवीर सिम्फ़नी परिसर में श्रद्धालुओं का जुटना प्रारंभ हो गया था। पुरुष, महिलाएं, बुजुर्ग और युवा सभी पारंपरिक परिधानों में सुसज्जित होकर इस पावन यात्रा का हिस्सा बनने के लिए उत्साहित नजर आए। महिलाओं ने रंग-बिरंगे परिधान और सिर पर चुनरी धारण की थी, जबकि पुरुषों ने केसरिया साफा और पारंपरिक वस्त्र पहनकर भक्ति का अद्भुत वातावरण निर्मित किया। हर श्रद्धालु के हाथ में या कंधे पर पवित्र निशान था, जो उनकी श्रद्धा, समर्पण और बाबा श्याम के प्रति अटूट विश्वास का प्रतीक था। यात्रा प्रारंभ होने से पहले विधिवत पूजा-अर्चना और मंत्रोच्चार किया गया। पंडितों द्वारा वैदिक मंत्रों के उच्चारण से वातावरण और भी अधिक पवित्र हो गया। श्रद्धालुओं ने बाबा श्याम का स्मरण करते हुए अपने जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा की कामना की। जैसे ही यात्रा प्रारंभ हुई, “जय श्री श्याम” और “हारे के सहारे, बाबा श्याम हमारे” के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा।

निशान यात्रा के दौरान भक्ति संगीत और

भजनों की मधुर धुनों ने पूरे माहौल को आध्यात्मिक रंग में रंग दिया। डीजे पर बज रहे भक्ति गीतों पर श्रद्धालु भावविभोर होकर नाचते और गाते हुए आगे बढ़ रहे थे। ढोल-नगाड़ों की गूंज और जयकारों की प्रतिध्वनि से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया। यह दृश्य किसी आध्यात्मिक उत्सव से कम नहीं था, जहां हर व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की चिंताओं को भूलकर केवल भक्ति में लीन था। निशान यात्रा रघुवीर सिम्फ़नी से निकलकर अलथान क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से होती हुई श्री श्याम मंदिर तक पहुंची। यात्रा के मार्ग में स्थानीय निवासियों और व्यापारियों ने श्रद्धालुओं का भव्य स्वागत किया। कई स्थानों पर पुष्पवर्षा की गई, जिससे वातावरण और भी दिव्य हो गया। श्रद्धालुओं के लिए जगह-जगह जल, शरबत और प्रसाद की व्यवस्था की गई, जिससे सेवा और सहयोग की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

इस यात्रा की सबसे विशेष बात 108 निशानों का सामूहिक अर्पण था। धार्मिक मान्यता के अनुसार 108 संख्या अत्यंत पवित्र और शुभ मानी जाती है। यह संख्या पूर्णता, संतुलन और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक है। श्रद्धालुओं ने इन पवित्र निशानों को बाबा श्याम के चरणों में अर्पित कर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन और आशीर्वाद की कामना की।

यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के चेहरों पर अद्भुत संतोष और आनंद झलक रहा था। कई श्रद्धालु ऐसे थे, जो वर्षों से इस यात्रा में भाग लेते आ रहे हैं और इसे अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं। उनके अनुसार, निशान यात्रा में भाग लेने से मन को शांति मिलती है और जीवन में नई ऊर्जा का संचार होता है। यह केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि आत्मिक जुड़ाव और आस्था की अनुभूति है।

आयोजकों ने बताया कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजन समाज में एकता और भाईचारे को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब लोग एक साथ भक्ति में लीन होते हैं, तो जाति, वर्ग और सामाजिक भेदभाव स्वतः समाप्त हो जाते हैं। सभी श्रद्धालु केवल एक भक्त के रूप में बाबा के समक्ष उपस्थित होते हैं, जहां केवल भक्ति और समर्पण का महत्व होता है।

इस आयोजन में महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रही। महिलाओं ने पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ निशान यात्रा में भाग लिया और भक्ति गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। बच्चों की उपस्थिति ने भी इस यात्रा को और अधिक जीवंत बना दिया। छोटे-छोटे बच्चे अपने माता-पिता के साथ यात्रा में शामिल होकर भक्ति और संस्कृति के मूल्यों को आत्मसात करते नजर आए।

श्री श्याम मंदिर पहुंचने के बाद श्रद्धालुओं ने विधिपूर्वक बाबा को निशान अर्पित किए और आरती में भाग लिया। मंदिर परिसर में भक्ति का अद्भुत दृश्य देखने को मिला। श्रद्धालुओं ने बाबा के दर्शन कर अपने जीवन की समस्याओं के समाधान और सुख-समृद्धि की प्रार्थना की। कई श्रद्धालुओं ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि बाबा श्याम की कृपा से उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं।

यह निशान यात्रा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं की जीवंत झलक भी है। इस प्रकार के आयोजन समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत के महत्व का एहसास कराते हैं। आज के आधुनिक और व्यस्त जीवन में ऐसे आयोजन लोगों को मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुलन प्रदान करते हैं।

आयोजन की सफलता में श्री श्याम सिम्फ़नी परिवार और स्थानीय श्रद्धालुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आयोजकों ने पूरे आयोजन की व्यवस्था अत्यंत सुव्यवस्थित और अनुशासित तरीके से की। सुरक्षा, यातायात और श्रद्धालुओं की सुविधा का विशेष ध्यान रखा गया, जिससे कार्यक्रम शांतिपूर्ण और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस भव्य निशान यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि भक्ति और आस्था की शक्ति असीम होती है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने, सकारात्मक ऊर्जा फैलाने और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का माध्यम है। अलथान क्षेत्र में आयोजित इस निशान यात्रा ने श्रद्धालुओं के हृदय में भक्ति की ज्योति प्रज्वलित की और उन्हें आध्यात्मिक संतोष प्रदान किया।

संपादकीय

खनक की दो ध्वनियाँ: चूड़ियों की कोमलता और तलवार की कठोरता का सांस्कृतिक अर्थ

ध्वनि केवल कानों से नहीं सुनी जाती, वह मन और स्मृति में भी गूंजती है। खनक भी ऐसी ही ध्वनि है, जो अपने साथ अर्थों का पूरा संसार लेकर आती है। जब तलवारें खनकती हैं, तो इतिहास करवट लेता है, साम्राज्य बनते-बिगड़ते हैं और रणभूमि में वीरता की गाथाएं लिखी जाती हैं। और जब चूड़ियां खनकती हैं, तो घर-आंगन में जीवन मुस्कुराता है, संबंधों में मधुरता उतरती है और प्रेम की अनकही भाषा बोल उठती है। एक ही शब्द—खनक—दो बिल्कुल अलग संसारों की ओर ले जाता है। फर्क केवल वस्तु का नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपे अर्थ और भाव का है।

तलवार की खनक सदियों से शक्ति और संघर्ष का प्रतीक रही है। उसकी टंकार में चुनौती होती है, प्रतिरोध होता है और विजय की आकांक्षा होती है। तलवार जब म्यान से निकलती है, तो उसके साथ एक निर्णय भी निकलता है—लड़ने का, बचाव का या अधिकार स्थापित करने का। तलवार की धातु की आवाज में कठोरता होती है। वह चेतावनी देती है कि अब शब्दों का समय समाप्त हो चुका है और कर्म का समय आ गया है। इसीलिए तलवार की खनक को वीर-रस से जोड़ा गया है। वह उत्साह जगाती है, साहस भरती है और संघर्ष की प्रेरणा देती है। इसके विपरीत, चूड़ियों की खनक कोमल होती है, लेकिन उसका प्रभाव कम नहीं होता। चूड़ियां जब कलाई पर टकराती हैं, तो उनमें जीवन की लय सुनाई देती है। वह ध्वनि घर की चहल-पहल, स्त्री की उपस्थिति और संबंधों की आत्मीयता का संकेत देती है। चूड़ियों की खनक शृंगार-रस को जन्म देती है, जिसमें सौंदर्य, प्रेम और अपनापन शामिल होता है। वह ध्वनि किसी रणभूमि का ऐलान नहीं करती, बल्कि मन के भीतर एक मधुर स्पंदन पैदा करती है। फिर भी, यह मान लेना कि चूड़ियां केवल कोमलता का प्रतीक हैं, एक अधूरा निष्कर्ष होगा। चूड़ियों का सांस्कृतिक अर्थ कहीं अधिक व्यापक है। जब किसी को ललकारने के लिए चूड़ियां भेंट की जाती हैं, तो वह एक प्रतीकात्मक चुनौती होती है। यह संकेत होता है कि यदि तुममें साहस नहीं है, तो घर बैठो। यहां चूड़ियां एक तरह से हथियार का रूप ले लेती हैं—शब्दों के बिना दिया गया तीखा संदेश। यह सामाजिक व्यंग्य भी है और मानसिक दबाव भी। तलवार शरीर को घायल कर सकती है, लेकिन चूड़ियों का यह प्रतीक आत्मसम्मान को चुनौती देता है। चूड़ियों का यह द्वंद्वात्मक रूप उन्हें तलवार से अधिक जटिल और प्रभावशाली बनाता है। तलवार का उपयोग सीमित है—वह या तो रक्षा करेगी या आक्रमण। लेकिन चूड़ियां प्रेम का भी माध्यम हैं और प्रतिरोध का भी। वे उल्लास की भी ध्वनि हैं और उपहास की भी। वे स्नेह की भी पहचान हैं और सामाजिक टिप्पणी का भी साधन। यही कारण है कि उनकी खनक का अर्थ परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। भारतीय समाज में चूड़ियों का गहरा सांस्कृतिक महत्व है। विवाह के समय चूड़ियां केवल आभूषण नहीं, बल्कि एक नए जीवन की शुरुआत का संकेत होती हैं। उनकी खनक में आशा होती है, भविष्य की कामना होती है और एक नए संबंध की धड़कन होती है। यह ध्वनि घर को घर बनाती है। जब कलाई पर रंगीन चूड़ियां सजी होती हैं, तो वह केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं, बल्कि जीवन की उपस्थिति का उत्सव होता है। लेकिन जब वही चूड़ियां शोक में तोड़ी जाती हैं, तो उनका अर्थ बदल जाता है। टूटी हुई चूड़ियों की खनक में करुणा होती है, विरह होता है और एक युग के समाप्त होने का संकेत होता है। यह ध्वनि अब उत्सव की नहीं, बल्कि शोक की होती है। इस प्रकार चूड़ियां जीवन के हर रंग की साक्षी हैं—प्रेम, उल्लास, चुनौती और पीड़ा की। समय के साथ चूड़ियों का प्रतीकात्मक अर्थ राजनीति और सामाजिक विमर्श में भी प्रवेश कर गया है। कई बार सार्वजनिक जीवन में यह आरोप या संकेत सुनने को मिलता है कि चूड़ियां भी हथियार बन सकती हैं। यह विचार भले ही अतिशयोक्ति हो, लेकिन यह इस बात का प्रमाण है कि चूड़ियों को अब केवल सजावट की वस्तु नहीं माना जाता। उनमें एक सांकेतिक शक्ति देखी जाने लगी है। यह शक्ति वास्तविक आक्रमण की नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक प्रभाव की है। किसी को चूड़ियां दिखाना या पहनने का संकेत देना एक मानसिक आक्रमण है—जो सामने वाले के आत्मसम्मान को झकझोर सकता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि महान शायर Kaifi Azmi ने स्त्री की शक्ति को पहचानते हुए उसे अपने आंचल को परचम बनाने का आह्वान किया था। यह आह्वान केवल कविता नहीं था, बल्कि सामाजिक क्रांति का संदेश था। इसी संदर्भ में चूड़ियां भी स्त्री की आंतरिक शक्ति का प्रतीक बन सकती हैं।

कट्टर दक्षिणपंथ की तरफ खिसकती धुरी

> मानवता के लिए सदा से चुनौती रही है कि तकनीकी क्रांति को काबू में कैसे रखा जाए। चाहे वह संहारक अस्त्र-शस्त्र हों। इसमें लोकतांत्रिक संस्थानों की सकारात्मक भूमिका रही। अब ऐसे दौर में जब कट्टर दक्षिणपंथी विचारधारा की लहर है, दुनिया कुछ तानाशाह शासकों के रहमोकरम पर है।

मनुष्य के विकास क्रम में 'नियंत्रित आग' की क्षमता हासिल करना शायद सबसे अहम पलों में एक था, क्योंकि एक बड़े आकार का दिमाग होने एवं जटिल गणना करने की उसकी क्षमता के लिए ईंधन के रूप में जितनी मात्रा में कैलोरी की जरूरत होती है, वह पका हुआ भोजन मिलने से संभव हुआ (इंसानी दिमाग शरीर की कुल ऊर्जा का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा खर्च करता है)। ऐसा माना जाता है कि आग ने इंसानों की भोजन हजम करने वाली क्षमता बढ़ाने में मदद की, जिसके अभाव में अन्य जीव-जंतुओं के दिमाग छोटे रह गए। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में जैविक मानव-विज्ञान के प्रोफेसर रिचर्ड रैंगहम ने इसे 'कुकिंग हाइपोथिसिस' का नाम दिया है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य के जिन पूर्वजों ने 'नियंत्रणयुक्त आग' की सामर्थ्य विकसित की, वे न केवल अपने समय के बल्कि सर्वकालिक खोजकर्ता/वैज्ञानिक गिने जाएंगे।

ऋग्वेद की सर्वप्रथम पंक्ति है 'अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवामृत्विजम्, होतारं रत्नधातमम्' अर्थात् 'अग्नि की मैं आराधना करता हूं, वह जो ईश्वर के सम्मुख प्रज्वलित है, देवता जो देखता है सत्य को, योद्धा, और है भरपूर आनंद प्रदाता'। यह अग्नि देव का आह्वान है, जिसमें उनकी स्तुति मनुष्य और दिव्य ऊर्जा के बीच माध्यम के रूप में की गई है। 'नियंत्रणयुक्त आग' और पके भोजन की बदौलत इंसान की सूझबूझ खोज एवं आविष्कार करने में तरक्की करती गई। हालांकि, मध्य युग के महान वैज्ञानिकों और खोजकर्ताओं ने ज़बरदस्त तरक्की की थी, तथापि बड़ी छलांग औद्योगिक क्रांति के समय लगी, जिसके दौरान इंसानी सूझबूझ एवं आविष्कारों की एक बड़ी लहर देखी गई। इसने पूरे यूरोप में लोकतांत्रिक आंदोलनों को भी जन्म दिया। विज्ञान के साथ-साथ साहित्य भी फला-फूला।

लोकतांत्रिक शासन और संस्थानों के विकास के कारण औद्योगिक क्रांति के परिणाम अभी भी काफी हद तक मनुष्यता के नियंत्रण में थे। ये स्वभाव से उदार थीं, जब तक कि जर्मनी, स्पेन और इटली जैसे राज्यों में तानाशाही का उदय नहीं हुआ, जिसने इन देशों की लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर कर दिया। हालांकि, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ज़बरदस्त जनसमर्थन के चलते लोकतंत्र कायम रहा। इस समय ने अगली बड़ी छलांग देखी— आण्विक ऊर्जा, जिसने सांस थामे बैठी दुनिया पर कहर बरपा दिया। सौभाग्य से, दुनिया में सहमति बनी और इस ऊर्जा को नियंत्रण में रखने के लिए संस्थान बनाए गए। परमाणु संपन्न शक्तियों ने संधियों पर हस्ताक्षर किए और उनपर अमल किया। अब तक तो हम कामयाब रहे हैं और इसका इस्तेमाल अधिकांशतः सकारात्मक तरीके से होता आया है। ऐसा हमारे लोकतंत्रों, उदारवादी सरकारों और संस्थानों की वजह से संभव हो पाया।

आज जब इंसान कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और क्वांटम कंप्यूटर विकसित करने में लगा है और चूंकि ये दोनों साथ मिल रहे हैं, ऐसे में 'सेंटिएंट' एआई (चेतन कृत्रिम बुद्धिमत्ता) की तगड़ी संभावना है। सैद्धांतिक तौर पर यह ऐसा एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) है जो स्वयं सोच-विचार कर सके और अपने फैसले खुद ले सके। क्या हम एक बार फिर से अहम मोड़ पर हैं... क्या मनुष्य अगली 'नियंत्रित आग' विकसित करने ही वाला है? तकनीक के विकास के साथ-साथ मानवता के विकास के लिए सदा से चुनौती रही है कि पैदा की गई आग को 'काबू में कैसे रखा जा सके', क्योंकि नियंत्रण न रहने पर यह तबाही मचा देगी। चेर्नोबिल और अन्य न्यूक्लियर आपदाएं इसका एक उदाहरण है, इतने ही 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' पर बम गिराने जैसे कृत्य भी।

इसी प्रकार, कोविड महामारी के बारे में कई सवाल अनसुलझे हैं, तकनीक के गलत इस्तेमाल के बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है, कि कैसे अपने फायदे के लिए बनाई गई तकनीक को मनुष्य जनसंहार करने का हथियार बनाने अथवा फिर दूसरों पर नियंत्रण बनाने में बदल देता है। क्योंकि जब हम इतनी आधुनिक तकनीक बना रहे हैं, तब हमें कार्ल सैगन की दी संज्ञा 'तकनीक की किशोरावस्था' को ध्यान में रखना चाहिए, जिसमें अपनी खासियत के अनुसार, इंसान के पास दुनिया बदलने की ज़बरदस्त ताकत तो है, लेकिन उसका इस्तेमाल समझदारी या दूरंदेशी से करने की अक्लमंदी नहीं है। आज यह गौरतलब है कि धुरी ठेठ दक्षिणपंथ की तरफ सरक रही है, इसे अमेरिका को पुनः महान बनाओ (मागा) अभियान और यूरोप, एशिया, दक्षिण अमेरिका वगैरह में इस किस्म की राजनीतिक लहरों में देखा जा सकता है। हमारी महान तकनीकी तरक्की ऐसे वक्त में हो रही है जब राजनीति एवं सरकार में उदारवाद की जगह ठेठ दक्षिणपंथ लेता जा रहा है। उदारवादी लोकतंत्र और उदारवादी अर्थव्यवस्था की जगह अधिनायकवादी राजनीति और अर्थव्यवस्था लेती जा रही है... विश्व व्यवस्था फिर से राष्ट्रवादी राज्य की तरफ लौट रही है। इतना भर नहीं, 'सरकारी नियंत्रण' शासन के कहीं ज़्यादा कठोर स्वरूप की तरफ जा रहा है, जोकि अधिनायकवाद है। कोशिश यही है कि लोकतांत्रिक चुनाव का दिखावा बना रहे और व्यवस्था को अंदर से खोखला कर दिया जाए। अधिनायकवाद और संरक्षणवाद मायावी रूप धरकर चुनी हुई सरकारों के दरवाज़े से घुस चुका है। दार्शनिक प्लेटो ने लोकतंत्र की एक बुराई की आलोचना की थी और कहा था कि धीरे-धीरे यह तानाशाही में बदल जाएगी क्योंकि शक्ति उन धूर्तों के पास चली जाएगी जो जनता को मूर्ख बनाने में माहिर होंगे – इसमें काफी सच्चाई है अगर हमने संस्थानों को नज़रअंदाज किया और सत्ता पर अंकुश एवं संतुलन को कमजोर कर दिया। मध्यमार्गी, उदारवादी विचारधारा को कट्टर दक्षिणपंथी लहर ने पीछे धकेल दिया है।

इस घटनाक्रम के अलावा, यूरोप, एशिया वगैरह के ज़्यादातर देशों के रक्षा बजट में बढ़ोतरी की गई है और उन्होंने लगभग तत्काल प्रभाव से हथियार खरीदने शुरू कर दिए हैं। यह बदलाव विकासशील एवं विकसित अर्थव्यवस्थाओं को विकासोन्मुख होने के बजाय फिर अधिक शस्त्रीकरण की तरफ मोड़ देता है।

इसका फ़ायदा बड़े सैन्य उद्योग प्रतिष्ठानों को मिलता है। आज की तारीख में, देशों के बजट को फिर से और ज्यादा हथियार खरीदने के हिसाब से बनाया जा रहा है, परमाणु संधियों को रद्द किया जा रहा है और आण्विक हथियारों के जखीरे को और भरा जा रहा है... यह सब एक बड़ी मुसीबत आने की ओर इशारा करता है। दुनिया भर में अलग-अलग जगहों पर युद्धों के साथ यह शुरू हो भी चुका है। इसमें एआई की आमद भी जोड़ दें तो आपके पास एक ऐसी दुनिया है जो चंद तकनीक-मठाधीशों और तानाशाह शासकों के रहमोकरम पर है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु उर्जा एजेंसी, निशस्त्रीकरण आयोग और संयुक्त राष्ट्र के तहत कई अन्य संस्थान, परमाणु ऊर्जा विकास एवं उपयोग पर एक व्यवस्थागत नियंत्रण प्रणाली बनाने में सहायक रहे थे। संयुक्त राष्ट्र निरीक्षकों द्वारा निरीक्षण किए जाने की भी एक व्यवस्था थी। भले ही एआई अभी विकास चरण में है, लेकिन बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही है और दीर्घकालिक असर डालने वाले बदलाव और मुश्किलें पैदा करने में सक्षम है, जिस पर अभी तक कोई व्यवस्थागत नियंत्रण नहीं है।

तुरंत जरूरत इस बात की है कि एआई के इस हमले का सामना करने के लिए राष्ट्र एकजुट हों और नियंत्रण एवं संतुलन व्यवस्था लागू करें, यदि ऐसा न कर पाए तो ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है जिसमें एआई एक 'बेकाबू आग' बन सकती है।

प्रेरणा

चिड़ियाघर, ज़ेबरा और ज़िम्मेदारियों की ठंडी होती संवेदना

उस साल की सर्दी कुछ अलग थी। ठंड केवल मौसम में नहीं थी, वह हवा के साथ-साथ व्यवस्था की नसों में भी उतरती जा रही थी। तापमान कभी-कभी तीन डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर जाता था और ऐसा लगता था जैसे केवल पेड़-पौधे और जानवर ही नहीं, बल्कि इंसानों की संवेदनाएं भी ठिठुरने लगी हैं। उसी ठंडी सुबह एक अखबार के पन्ने पर छपी एक तस्वीर ने सबका ध्यान खींच लिया। वह किसी नेता या मंत्री की तस्वीर नहीं थी, बल्कि एक ज़ेबरा था—एक ऐसा जानवर, जिसकी काली-सफेद धारियां हमेशा बच्चों के लिए कौतूहल और आकर्षण का केंद्र रही हैं। लेकिन इस तस्वीर में वह खड़ा नहीं था, वह स्थिर पड़ा था—असामान्य रूप से शांत, जैसे किसी अनकही कहानी का अंतिम वाक्य।

यह चिड़ियाघर दिल्ली के उस हिस्से में था, जहां दुनिया भर के जीव एक कृत्रिम दुनिया में बसाए गए थे। यह जगह प्रकृति का विकल्प थी, लेकिन उसमें प्रकृति की स्वतंत्रता नहीं थी। वहां हर जीव की सांस, हर कदम और हर आहट किसी न किसी मानव व्यवस्था की निगरानी में थी। उसी निगरानी के बीच यह ज़ेबरा रहता था, जो कभी अफ्रीका की खुली धरती पर दौड़ने वाली प्रजाति का प्रतिनिधि था। वह अब एक सीमित घेरे में था, जहां उसकी पहचान उसकी स्वतंत्रता नहीं, बल्कि उसकी दुर्लभता थी।

कहा जाता था कि यह कोई साधारण ज़ेबरा नहीं था। इसकी वंशावली लंबी और जटिल थी। अफ्रीका की धरती से होते हुए उसके पूर्वज कभी संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचे थे और फिर वहां से दुनिया के अन्य हिस्सों में फैल गए। यह वही जीव था, जिसे कभी सम्मानपूर्वक एक राष्ट्राध्यक्ष से दूसरे राष्ट्राध्यक्ष को भेंट किया गया था। इस तरह वह केवल एक जानवर नहीं था, बल्कि कूटनीति का प्रतीक भी था—एक ऐसा जीव, जो जंगल से निकलकर सत्ता और प्रतीकों की दुनिया में प्रवेश कर चुका था।

लेकिन उस रात, जब तापमान गिरकर असहनीय स्तर तक पहुंच गया था, एक और जीव ठंड से जूझ रहा था—हथिनी गौरी। वह दक्षिण भारत से आई थी और इतनी कठोर ठंड की आदी नहीं थी। ठंड ने उसके शरीर को ही नहीं, उसके व्यवहार को भी प्रभावित कर दिया था। वह बेचैन हो गई थी, उसकी जंजीरें उसे रोक नहीं पा रही थीं। अंततः उसने अपनी कैद को तोड़ दिया और चिड़ियाघर के अंधेरे रास्तों पर भटकते हुए उस जगह पहुंच गई, जहां ज़ेबरा रहता था।

उसके बाद जो हुआ, वह किसी ने प्रत्यक्ष नहीं देखा। केवल अनुमान लगाए गए। शायद ज़ेबरा उत्सुकतावश आगे बढ़ा होगा, शायद उसने अपने क्षेत्र की रक्षा करने की कोशिश की होगी, या शायद वह भयभीत होकर भागा होगा। लेकिन जो तथ्य सामने आया, वह यह था कि वह दीवार से टकरा गया था। उसकी गति, जो कभी उसकी शक्ति थी, उसी क्षण उसकी कमजोरी बन गई। उसके शरीर के भीतर चोटें आईं और थोड़ी ही देर में उसकी सांसें थम गईं।

लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं हुई। असली कहानी तो उसके बाद शुरू हुई। अखबारों ने इसे केवल एक जानवर की मौत नहीं माना। उन्होंने इसे एक राष्ट्रीय क्षति घोषित कर दिया। उन्होंने सवाल पूछे—निदेशक कहां था? महावत कहां था? जिम्मेदारी किसकी थी? अचानक एक ज़ेबरा, जो कुछ दिन पहले तक केवल एक प्रदर्शनी का हिस्सा था, राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक बन गया।

एक जांच आयोग का गठन किया गया। आयोग ने केवल चिड़ियाघर का ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संदर्भों का भी अध्ययन किया। उसने एम्स्टर्डम और नीदरलैंड के संग्रहालयों तक जाकर उस प्रजाति के इतिहास को खंगाला। उसने वैज्ञानिक रिपोर्टें देखीं, पोस्टमार्टम रिपोर्ट पढ़ीं और निष्कर्ष निकाला कि यह हत्या नहीं, बल्कि एक दुर्घटना थी। ज़ेबरा अपने ही भय और अपनी ही गति का शिकार हुआ था।

लेकिन इस निष्कर्ष से एक नया प्रश्न पैदा हुआ—अगर यह दुर्घटना थी, तो जिम्मेदारी किसकी थी? क्या ठंड की थी? क्या व्यवस्था की थी? या उस महावत की थी, जो उस रात सो गया था? आयोग ने अंततः महावत को दोषी ठहराया। कहा गया कि अगर वह जाग रहा होता, अगर उसने थोड़ी सतर्कता दिखाई होती, तो शायद यह घटना टाली जा सकती थी।

लेकिन इस निष्कर्ष में एक गहरी विडंबना छिपी थी। महावत भी उसी ठंड का शिकार हुआ था, जिसका शिकार हथिनी और ज़ेबरा हुए थे। वह भी इंसान था, उसकी भी सीमाएं थीं। लेकिन व्यवस्था को किसी दोषी की आवश्यकता थी, और वह सबसे कमजोर व्यक्ति को ही दोषी ठहरा सकती थी।

यह घटना केवल एक जानवर की मृत्यु की कहानी नहीं थी। यह उस व्यवस्था की कहानी थी, जिसमें प्रतीकों का महत्व वास्तविकता से अधिक होता है। जब तक ज़ेबरा जीवित था, वह केवल एक प्रदर्शनी था। लेकिन उसकी मृत्यु के बाद वह एक सांस्कृतिक धरोहर बन गया। उसकी रक्षा के लिए आयोग बने, रिपोर्टें लिखी गईं और नीतियों की बात हुई।

यह विडंबना केवल चिड़ियाघर तक सीमित नहीं है। यह हमारे समाज का भी प्रतिबिंब है। हम अक्सर जीवित चीजों की उपेक्षा करते हैं और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें महत्व देते हैं। हम जिम्मेदारी से बचते हैं और दोष किसी एक व्यक्ति पर डाल देते हैं। हम समस्याओं का समाधान खोजने के बजाय उनके लिए प्रतीकात्मक प्रतिक्रियाएं देते हैं।

चिड़ियाघर केवल जानवरों का घर नहीं होता, वह मानव व्यवस्था का दर्पण भी होता है। वहां जानवरों की कैद हमें हमारी अपनी सीमाओं की याद दिलाती है। वहां की घटनाएं हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्या हम वास्तव में जिम्मेदार हैं, या केवल जिम्मेदारी का दिखावा करते हैं।

उस ठंडी रात की कहानी आज भी प्रासंगिक है। वह हमें यह सिखाती है कि संवेदनशीलता केवल शब्दों में नहीं, कर्म में होनी चाहिए। जिम्मेदारी केवल रिपोर्टों में नहीं, व्यवहार में दिखाई देनी चाहिए। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि किसी भी व्यवस्था की वास्तविक परीक्षा उसके कमजोर सदस्यों के साथ उसके व्यवहार से होती है।

अंततः, चिड़ियाघर केवल जानवरों की कैद का स्थान नहीं है। वह हमारी मानसिकता का प्रतीक है। वहां का हर पिंजरा, हर दीवार और हर घटना हमें यह याद दिलाती है कि अगर संवेदनाएं ठंडी हो जाएं, तो सबसे सुरक्षित स्थान भी असुरक्षित हो जाता है। और तब केवल जानवर ही नहीं, इंसानियत भी धीरे-धीरे मरने लगती है—बिना शोर के, बिना खनक के, ठीक उसी तरह जैसे उस रात एक ज़ेबरा मर गया था।

विज्ञान पर अटल, भारत में पनप रही नई वैज्ञानिक चेतना

भारत के किसी बड़े शहर की चकाचौंध से दूर, ओड़िशा या छत्तीसगढ़ के किसी ऐसे जिले में जहां मोबाइल के सिग्नल भी मुश्किल से पहुंचते हैं, वहां एक 14 साल का बच्चा एक पुराने कार्डबोर्ड, कुछ तारों और एक सस्ते सेंसर के साथ बैठा है। वह कोई खिलौना नहीं बना रहा। वह एक ऐसी मशीन तैयार कर रहा है जो मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी होने पर उसके पिता के मोबाइल पर मैसेज भेज सके। जेन जी के शोर और जेनरेटिव एआई की चकाचौंध के बीच यह आज के भारत की वह तस्वीर है जिसे मुख्यधारा का मीडिया अक्सर कुछ कम तवज्जो देता है।

यह तस्वीर है बच्चों में विज्ञान चेतना को समर्पित अटल इनोवेशन मिशन की, जो देश के कोने-कोने में स्थापित अटल टिंकरिंग लैब्स के जरिये एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहा है, जो विज्ञान को रटती नहीं, उसे जीती है। 10 सालों की यह कहानी केवल मशीनों की नहीं है; यह कहानी है उस आत्मविश्वास की, जिसने भारत को 'जुगाड़' के देश से 'इनोवेशन' के ग्लोबल हब की ओर मोड़ दिया है।

औसत विद्यार्थियों के लिए भारत में विज्ञान शिक्षण एक बोरियत भरा बोझ रहा है। कक्षाओं में ब्लैकबोर्ड पर 'प्रकाश के परावर्तन' या 'ओम के नियम' के चित्र तो बनते थे, लेकिन साधारण मेधा वाले छात्रों को यह समझ नहीं आता था कि ये उनकी निजी जिंदगी में क्या बदलाव लाएंगे। 'विज्ञान आओ करके सीखें' जैसी पाठ्यक्रम पुस्तकें और 'आविष्कार' जैसी पत्रिकाएं कुछ रुचि जगाती भी थीं, मगर प्रैक्टिकल के पीरियड्स को छोड़कर प्रयोगशाला में प्रवेश लगभग वर्जित था।

हाईस्कूल में पहली बार नसीब होने वाली प्रयोगशालाएं भी ऐसी, जहां उपकरणों की उपलब्धता पाठ्यक्रम से एक इंच टस से मस होने को तैयार नहीं; नतीजतन अरुचि से भरे कई विद्यार्थियों का जोर सीखने पर नहीं, किसी सहृदय प्रयोगशाला सहायक की कृपा से प्रैक्टिकल में नंबर जुगाड़ने पर होता था। ऐसे में कक्षा 10 उत्तीर्ण करने के बाद कई विद्यार्थी वाणिज्य अथवा कला संकाय में प्रवेश ले लेते थे, इनमें भी लड़कियों की संख्या बहुत होती थी।

मगर अटल टिंकरिंग लैब ने इस पूरी व्यवस्था में दिलचस्प परिवर्तन किए है। अब कक्षा छह से ही यहां 'खुद करके देखो' की संस्कृति है। संप्रति भारत भर के स्कूलों में फैली इन 10 हजार से अधिक लैब्स में जब कोई बच्चा खुद थ्री-डी प्रिंटर को कमांड देता है या रोबोटिक्स किट को असेंबल करता है, तो उसके भीतर विज्ञान को लेकर झिझक दीवानगी भरी दिलचस्पी में बदलने लगती है। विज्ञान किताबों के पन्नों से निकलकर उसके हाथों की हथेलियों पर नाचने लगता है।

यहां बच्चे विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के सिद्धांतों को किताबों से नहीं, बल्कि प्रयोग करके सीखते हैं। उपकरणों से काम करते हुए वे जिज्ञासा, समस्या-समाधान और रचनात्मकता को विकसित करते हैं। प्रोजेक्ट बनाते हुए टीमवर्क और उद्यमिता की भावना भी विकसित होती है। यही बदलाव छात्रों को रटने से खोज की ओर लेकर जाता है और यही विज्ञान की असली ताकत है!

डीप टेक का बढ़ता दायरा

जिन पाठकों ने इस सप्ताह नई दिल्ली में आयोजित एआई इंपैक्ट समिट पर नजर रखी होगी, वे समझ रहे होंगे कि भारत की स्थिति आज डीप टेक में वैसी ही है जैसी बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में साफ्टवेयर के क्षेत्र में थी—हम एक बड़े धमाके के मुहाने पर खड़े हैं। आज हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ब्लॉकचेन की बात करते हैं। आम आदमी के लिए ये शब्द अजनबी हो सकते हैं, लेकिन भारत की नवांकुर विज्ञानी मेधा के लिए ये रोजमर्रा के औजार हैं। डीप टेक का सरल अर्थ है ऐसी तकनीक जो गहन वैज्ञानिक शोध पर आधारित हो।

भारत आज अंतरिक्ष से लेकर रक्षा तक में डीप टेक का लोहा मनवा रहा है। जबकि पृष्ठभूमि में एटीएल जैसी इनोवेटिव प्रयोगशालाओं, इसरो के प्रोजेक्ट युविका और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग संचालित इंस्पायर-मानक जैसे कार्यक्रमों से इसकी नींव रखी जा रही है। वास्तव में जब एक छठी कक्षा का बच्चा यह समझता है कि सेंसर कैसे काम करता है और नवीं कक्षा के बच्चे वर्किंग सैटेलाइट माडल बनाते हैं, तो भविष्य के लिए ऐसे डाटा साइंटिस्ट, एआई या स्पेस इंजीनियर तैयार हो रहे होते हैं जो विदेशी ज्ञान पर नहीं, विज्ञान के सहजबोध पर निर्भर होते हैं।

नई पीढ़ी की विज्ञान में बढ़ती रुचि और परिणामस्वरूप इसकी तरफ बढ़ते रुझान का सबसे क्रांतिकारी पहलू है—विज्ञान उद्यमिता। इसी मंगलवार को मुंबई में भारत-फ्रांस इनोवेशन फोरम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि अटल इनोवेशन मिशन 100 से अधिक इन्क्यूबेटर और डीप-टेक स्टार्टअप्स की बढ़ती हुई पाइपलाइन को जोड़ता है। उन्होंने अटल टिंकरिंग लैब्स को स्कूली स्तर पर उस प्रारंभिक बिंदु के रूप में बताया, जिसे मार्गदर्शन, छात्रवृत्ति और स्टार्टअप पूंजी तक पहुंच का समर्थन प्राप्त है। विभिन्न हैकाथान से तराशे हुए विज्ञानी मेधा के यह हीरे केवल प्रोजेक्ट नहीं बना रहे, ये भविष्य की यूनिकॉर्न कंपनियों की रूपरेखा लिख रहे हैं। आइडिया से पेटेंट तक का सफर अब आसान हो गया है। नीति आयोग ने ऐसी व्यवस्था की है कि अगर किसी छात्र का आइडिया वाकई दमदार है, तो उसे इनक्यूबेशन सेंटर्स और निवेशकों से जोड़ा जाता है।

वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत की रैंकिंग में जो सुधार हुआ है, उसके पीछे इन 10 हजार से अधिक लैब्स का बड़ा हाथ है। दुनिया देख रही है कि भारत के किशोर और युवा अब केवल कोड नहीं लिख रहे, बल्कि हार्डवेयर और डीप टेक में भी हाथ आजमा रहे हैं। इसरो के छोटे उपग्रहों के निर्माण में स्कूली छात्रों की भागीदारी इस बात का सबसे बड़ा सबूत है। तो अगली बार जब आप अपने बच्चे के हाथ में कोई उपकरण देखें, तो उसे प्रेरित करें कि वह यह सोचे कि यह काम कैसे करता है।

अभियान

श्मशान की निस्तब्धता में जागता अद्वैत: अघोरियों की अनंत साधना का आंतरिक सत्य

मानव सभ्यता ने हमेशा उन मार्गों से दूरी बनाई है जो उसे असुविधाजनक प्रश्नों के सामने खड़ा करते हैं। मृत्यु, नश्वरता, शरीर की अस्थिरता और अस्तित्व की सीमाएँ—ये सभी ऐसे सत्य हैं, जिनसे मनुष्य सहज नहीं होता। वह मंदिरों की घंटियों, दीपों की रोशनी और पुष्पों की सुगंध में ईश्वर को खोजने का आदी है, परंतु जब वही ईश्वर उसे श्मशान की राख, जली हुई लकड़ियों और मौन में दिखाई देने लगता है, तो उसका मन विचलित हो उठता है। अघोरी साधु इसी विचलन के पार खड़े होते हैं। वे उस सत्य के साधक हैं, जिसे समाज देखने से कतराता है। उनके लिए श्मशान भय का स्थान नहीं, बल्कि बोध का केंद्र है; राख अपवित्रता का प्रतीक नहीं, बल्कि अनंत का संकेत है।

अघोरी शब्द का मूल संस्कृत के "अघोर" में निहित है, जिसका अर्थ है—जो घोर नहीं है, जो भयानक नहीं है, जो सहज है। यह अर्थ स्वयं में एक गहन दार्शनिक संकेत देता है। अघोरी वह है, जिसने भय के पार जाना सीख लिया है। जिसने जीवन और मृत्यु के बीच खड़े कृत्रिम विभाजन को मिटा दिया है। अघोरी परंपरा का आधार इस विचार पर टिका है कि ब्रह्मांड में कुछ भी अपवित्र नहीं है। यदि ईश्वर सर्वव्यापक है, तो वह केवल पवित्र माने जाने वाले स्थानों में ही नहीं, बल्कि उन स्थानों में भी है, जिन्हें समाज अपवित्र मानता है। यही कारण है कि अघोरी श्मशान को अपनी साधना का स्थल बनाते हैं, क्योंकि वहाँ जीवन का अंतिम सत्य निर्वस्त्र रूप में उपस्थित होता है।

इस मार्ग की प्रेरणा का मूल स्रोत भगवान शिव को माना जाता है, जिन्हें अघोर का आदर्श स्वरूप कहा गया है। शिव का व्यक्तित्व स्वयं इस दर्शन का जीवंत प्रतीक है। वे भस्म से अपने शरीर को अलंकृत करते हैं, श्मशान में निवास करते हैं और सामाजिक मर्यादाओं से परे स्थित दिखाई देते हैं। शिव का अघोर रूप इस सत्य का प्रतिनिधित्व करता है कि भय केवल मन की रचना है। जब मनुष्य भय से मुक्त हो जाता है, तब वह अस्तित्व के वास्तविक स्वरूप का अनुभव कर सकता है। अघोरी साधु स्वयं को शिव का अनुगामी मानते हैं और उसी निर्भीकता को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं।

अघोरी बनने की प्रक्रिया अत्यंत कठिन और दीर्घकालिक होती है। यह कोई आकस्मिक निर्णय नहीं, बल्कि एक गहन आंतरिक पुकार का परिणाम होता है। साधक को पहले एक गुरु की शरण में जाना पड़ता है, जो उसे इस मार्ग की दीक्षा देता है। यह दीक्षा केवल मंत्रों का उच्चारण नहीं, बल्कि जीवन के संपूर्ण पुनर्गठन की प्रक्रिया होती है। साधक को अपने परिवार, सामाजिक पहचान और व्यक्तिगत इच्छाओं से पूर्णतः विरक्त होना पड़ता है। उसे अपने भीतर छिपे भय, घृणा और मोह का सामना करना होता है। यह प्रक्रिया वर्षों तक चलती है, जिसमें साधक धीरे-धीरे अपने पुराने व्यक्तित्व को त्यागकर एक नए चेतन स्वरूप में प्रवेश करता है। श्मशान अघोरी साधकों के लिए केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक जीवंत गुरु है। वहाँ हर क्षण नश्वरता का स्मरण होता है। जली हुई लकड़ियाँ, राख में बदलते शरीर और मौन का विस्तार—ये सभी साधक को यह सिखाते हैं कि जीवन अस्थायी है। यह बोध उसे अहंकार से मुक्त करता है। जब साधक यह समझ लेता है कि शरीर केवल एक अस्थायी आवरण है, तब वह आत्मा की शाश्वतता को अनुभव करने के लिए तैयार हो जाता है। अघोरी साधक अपने शरीर पर श्मशान की भस्म लगाते हैं, क्योंकि वह उन्हें इस सत्य का निरंतर स्मरण कराती है कि अंततः सब कुछ इसी राख में विलीन हो जाना है।

अघोरी साधना का एक महत्वपूर्ण अंग कपाल साधना है। साधक मानव खोपड़ी, जिसे कपाल कहा जाता है, को अपने भिक्षापात्र के रूप में उपयोग करता है। यह बाहरी दृष्टि से विचित्र प्रतीत हो सकता है, परंतु इसके पीछे गहन प्रतीकात्मक अर्थ है। खोपड़ी जीवन की अंतिम अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। उसमें अब कोई अहंकार, कोई पहचान, कोई इच्छा नहीं बची होती। वह शून्य है। अघोरी साधक इस शून्यता को अपनाकर अपने भीतर के अहंकार को समाप्त करने का प्रयास करता है। कपाल उसके लिए मृत्यु का नहीं, बल्कि मुक्ति का प्रतीक बन जाता है।

अघोरी साधना का मूल उद्देश्य द्वैत को समाप्त करना है। सामान्य मनुष्य संसार को विरोधी ध्रुवों में बाँटकर देखता है—अच्छा और बुरा, पवित्र और अपवित्र, जीवन और मृत्यु। अघोरी इस विभाजन को भ्रम मानता है। उसके लिए सब कुछ एक ही चेतना का विस्तार है। जब यह बोध पूर्ण हो जाता है, तब साधक अद्वैत की अवस्था में प्रवेश करता है, जहाँ कोई भेद नहीं रह जाता। यह अवस्था केवल बौद्धिक समझ से नहीं, बल्कि गहन अनुभव से प्राप्त होती है। अघोरी साधक अपने शरीर और मन को साधने के लिए योग और ध्यान का सहारा लेते हैं। वे कुंडलिनी जागरण की प्रक्रिया का अभ्यास करते हैं, जिसमें शरीर की सुप्त ऊर्जा को जागृत किया जाता है। यह प्रक्रिया अत्यंत सूक्ष्म और कठिन होती है। साधक को अपने मन को पूर्णतः नियंत्रित करना पड़ता है। धीरे-धीरे उसका ध्यान बाहरी संसार से हटकर आंतरिक चेतना में केंद्रित हो जाता है। इस अवस्था में साधक को एक ऐसी शांति का अनुभव होता है, जो सामान्य अनुभवों से परे होती है।

समाज अक्सर अघोरियों को गलत समझता है। उनके बाहरी स्वरूप और अनुष्ठानों को देखकर उन्हें भयावह या विचित्र मान लिया जाता है। परंतु वास्तविकता यह है कि अघोरी साधक करुणा और समभाव के प्रतीक होते हैं। वे समाज के उन वर्गों की सेवा करते हैं, जिन्हें सामान्यतः उपेक्षित कर दिया जाता है। वे रोगियों की सहायता करते हैं, पीड़ितों को सांत्वना देते हैं और मानवता की सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। उनके लिए कोई ऊँच-नीच नहीं है। वे हर व्यक्ति में उसी दिव्यता को देखते हैं, जो स्वयं में अनुभव करते हैं।

अघोरी साधना में तीन प्रमुख अवस्थाएँ होती हैं—औघड़, अघोरी और परमहंस। औघड़ अवस्था में साधक प्रारंभिक दीक्षा प्राप्त करता है और सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का अभ्यास करता है। अघोरी अवस्था में वह अपने भीतर के द्वैत को समाप्त कर देता है और अद्वैत का अनुभव करता है। परमहंस अवस्था में साधक पूर्णतः शिवभाव में स्थित हो जाता है। इस अवस्था में उसके लिए संसार और मोक्ष का कोई भेद नहीं रह जाता। वह हर क्षण उसी परम चेतना में स्थित रहता है।

अघोरी मार्ग हमें एक गहन सत्य का बोध कराता है—मुक्ति भय से भागने में नहीं, बल्कि उसका सामना करने में है। जिस मृत्यु से हम डरते हैं, वही हमें जीवन का वास्तविक मूल्य सिखाती है। जिस अंधकार से हम दूर भागते हैं, उसी में प्रकाश का बीज छिपा होता है। अघोरी साधु उसी बीज को खोजने वाले साधक हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि जब हम अपने भीतर के भय और घृणा को त्याग देते हैं, तब हम अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सकते हैं।

अघोर की साधना अंततः आत्मा की यात्रा है—एक ऐसी यात्रा, जो बाहरी संसार से भीतर की ओर ले जाती है। यह यात्रा आसान नहीं है, परंतु जो इस मार्ग पर चलता है, वह अस्तित्व के उस सत्य को अनुभव करता है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अघोरी साधु उसी अनुभव के वाहक हैं। वे श्मशान की निस्तब्धता में बैठकर उस अनंत का ध्यान करते हैं, जो हर क्षण हमारे भीतर उपस्थित है। इस प्रकार अघोर केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि एक दृष्टि है—एक ऐसी दृष्टि, जो हमें जीवन को उसकी संपूर्णता में स्वीकार करना सिखाती है। यह हमें यह समझने में सहायता करती है कि भय और घृणा केवल मन की सीमाएँ हैं। जब हम इन सीमाओं को पार कर लेते हैं, तब हम उस स्वतंत्रता को अनुभव करते हैं, जो हमारे वास्तविक अस्तित्व का स्वरूप है। अघोरी साधु उसी स्वतंत्रता के साक्षी हैं, उसी सत्य के साधक हैं, और उसी अनंत के पथिक हैं, जहाँ जीवन और मृत्यु एक ही मौन में विलीन हो जाते हैं।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

टेक्सटाइल उद्योग के भविष्य की दिशा: एसएमए बैठक में एआई को अपनाने पर जोर

जीएनएस)। सूरत के प्रमुख व्यापारिक संगठन सूरत मर्केंटाइल एसोसिएशन (एसएमए) की 213वीं नियमित मासिक समस्या समाधान बैठक रविवार, 22 फरवरी 2026 को सिटी लाइट स्थित माहेश्वरी भवन में आयोजित की गई। सुबह 9:30 से 10:30 बजे तक चली इस महत्वपूर्ण बैठक में संगठन के प्रमुख नरेंद्र साबू, पंच पैनल और कोर कमेटी टीम की उपस्थिति में लगभग 90 व्यापारी भाइयों ने सक्रिय भागीदारी की। बैठक का उद्देश्य व्यापारिक विवादों का समाधान, उद्योग की चुनौतियों पर चर्चा और भविष्य की रणनीति तय करना था।

बैठक के दौरान समस्या समाधान की प्रक्रिया को प्राथमिकता दी गई। कुल 11 आवेदन पत्रों पर सुनवाई की गई, जिनमें से एक मामले का तत्काल समाधान आपसी बातचीत के माध्यम से कर दिया गया। शेष मामलों को विस्तृत जांच और निष्पक्ष निर्णय के लिए पंच पैनल और लीगल टीम को सौंपा गया। एसोसिएशन की यह कार्यशैली दर्शाती है कि संगठन व्यापारियों के हितों की रक्षा और पारदर्शी समाधान के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर 1 फरवरी की बैठक में उठे एक महत्वपूर्ण विवाद के समाधान की जानकारी भी साझा की गई। मामला पुणे की एक महिला व्यापारी से जुड़ा था, जिनके साथ 22 लाख रुपये के माल के गलत डिस्पैच को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ था। सूरत के एक व्यापारी द्वारा नकद में लिया गया माल गलत तरीके से भेजे जाने के कारण स्थिति जटिल हो गई थी। एसएमए के हस्तक्षेप और दोनों पक्षों के साथ विस्तृत संवाद के बाद संतोषजनक समाधान निकाला गया। महिला व्यापारी को 11 लाख रुपये नकद लौटाए गए और शेष 11 लाख रुपये के माल की अदला-बदली कर विवाद समाप्त किया गया। संगठन ने इसे व्यापारी हितों की रक्षा और आपसी विश्वास बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया।

हालांकि इस बैठक की सबसे प्रमुख चर्चा टेक्सटाइल उद्योग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के बढ़ते उपयोग और उसके प्रभाव पर केंद्रित रही। अध्यक्ष नरेंद्र साबू ने अपने संबोधन में कहा कि

बदलते समय के साथ टेक्सटाइल उद्योग को भी तकनीकी नवाचारों को अपनाना होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि आने वाले वर्षों में एआई टेक्सटाइल उद्योग की रीढ़ साबित हो सकता है, क्योंकि इससे उत्पादन प्रक्रिया तेज, सटीक और अधिक प्रभावी बन सकती है।

साबू ने कहा कि एआई के माध्यम से डिजाइनिंग, गुणवत्ता नियंत्रण, मांग का पूर्वानुमान और सप्लाई चेन प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार संभव है। पारंपरिक टेक्सटाइल उद्योग अब केवल श्रम आधारित व्यवस्था तक सीमित नहीं रह सकता। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में तकनीकी दक्षता ही सफलता का आधार बनेगी। एआई आधारित टूल्स से फैब्रिक डिजाइन को ग्राहकों की पसंद के अनुसार कस्टमाइज किया जा सकता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिल सकती है।

बैठक में विशेषज्ञों द्वारा यह भी बताया गया कि एआई तकनीक उत्पादन के दौरान होने वाली त्रुटियों को कम करने में मदद करती है। मशीन लर्निंग आधारित सिस्टम कपड़े की गुणवत्ता का स्वतः परीक्षण कर सकते हैं और दोषों की पहचान तुरंत कर सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि लागत में भी कमी आती है। इसके अलावा, डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से बाजार की मांग का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, जिससे अनावश्यक स्टॉक और वित्तीय जोखिम को कम किया जा सकता है।

मार्केटिंग के क्षेत्र में भी एआई के उपयोग पर विशेष जोर दिया गया। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण कर लक्षित विज्ञापन अभियान चलाए जा सकते हैं। इससे उत्पादों की वैश्विक स्तर पर पहुंच बढ़ेगी और छोटे व्यापारियों को भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाने का अवसर मिलेगा। बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि टेक्सटाइल उद्योग को पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ डिजिटल और तकनीकी नवाचारों को भी अपनाना होगा।

एसोसिएशन ने व्यापारियों को आश्वासन दिया कि एआई टूल्स और तकनीकों के उपयोग में उन्हें मार्गदर्शन और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। अध्यक्ष साबू ने घोषणा की कि भविष्य में इस विषय पर नियमित सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी, जहां विशेषज्ञ एआई की उपयोगी एप्लीकेशनों की जानकारी देंगे। इसका उद्देश्य व्यापारियों को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना और उद्योग को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है।

बैठक में उपस्थित व्यापारियों ने भी एआई को लेकर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। कई सदस्यों ने माना कि यदि सूरत के टेक्सटाइल उद्योग को अपनी वैश्विक पहचान और मजबूत करनी है, तो तकनीकी उन्नयन अनिवार्य है। उन्होंने एसोसिएशन से अनुरोध किया कि छोटे और मध्यम व्यापारियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, ताकि वे भी इस तकनीकी बदलाव का लाभ उठा सकें।

सूरत का टेक्सटाइल उद्योग देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहां के कपड़े और डिजाइन राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी लोकप्रिय हैं। ऐसे में एआई का समावेश उद्योग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है। यह न केवल उत्पादन क्षमता बढ़ाएगा, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित करेगा। तकनीक और परंपरा का संतुलित समन्वय सूरत को टेक्सटाइल नवाचार का केंद्र बना सकता है।

बैठक के अंत में संगठन के कई प्रमुख सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें महेश पाटोदिया, दुर्गेश टिबड़ेवाल, मनोज अग्रवाल, रामकिशोर बजाज, राजेश गुरनानी, रामरतन वोहरा, प्रीतम भाई, रमेश नंदवानी, अभय राठी और कमलेश जैन सहित अन्य सदस्य शामिल थे। सभी ने संगठन की पहल की सराहना की और भविष्य में भी सामूहिक सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम का समापन सौहार्दपूर्ण वातावरण में स्वादिष्ट अल्पाहार के साथ हुआ। एसएमए ने पुनः दोहराया कि वह व्यापारियों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को आपसी सहमति से सुलझाने और उद्योग को आधुनिक तकनीकों से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा। यह बैठक केवल समस्या समाधान तक सीमित नहीं रही, बल्कि टेक्सटाइल उद्योग के भविष्य की दिशा तय करने वाली एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभरी।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक की चंडीगढ़ शाखा में 590 करोड़ की वित्तीय गड़बड़ी, चार कर्मचारी निलंबित

जीएनएस)। नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के प्रमुख बैंक IDFC First Bank की चंडीगढ़ शाखा में 590 करोड़ रुपये की कथित वित्तीय गड़बड़ी का मामला सामने आने से बैंकिंग क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। बैंक ने इस गंभीर वित्तीय अनियमितता को तुरंत उजागर करते हुए चार कर्मचारियों को निलंबित कर दिया है और व्यापक आंतरिक जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में संकेत मिले हैं कि यह धोखाधड़ी हरियाणा सरकार से जुड़े कुछ खातों तक सीमित है। बैंक का कहना है कि अन्य ग्राहकों के खातों पर इस मामले का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन इस घटना ने बैंकिंग प्रणाली और आंतरिक नियंत्रण तंत्र की मजबूती पर सवाल खड़े कर दिए हैं। शाखा में हुई गड़बड़ी की जानकारी सबसे पहले तब सामने आई जब हरियाणा सरकार के कुछ विभागों ने अपने खातों में बचे शेष धन को अन्य बैंकों में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया। खातों के मिलान के दौरान यह पाया गया कि खातों में दर्ज शेष राशि और वास्तविक उपलब्ध धन के बीच गंभीर अंतर था। 18 फरवरी 2026 के आसपास शुरू हुई इस समन्वय प्रक्रिया में विसंगतियां स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आईं। इसके बाद बैंक ने तुरंत आंतरिक जांच प्रारंभ कर दी और संबंधित अधिकारियों को निलंबित कर दिया। बैंक ने शेयर बाजार को दी गई सूचना में कहा कि संदिग्ध लेनदेन शाखा स्तर पर किए गए और इनमें कुछ कर्मचारियों के साथ-साथ बाहरी व्यक्तियों की संभावित भूमिका भी सामने आई है। बैंक प्रबंधन ने स्पष्ट किया है कि इस मामले में शामिल पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक, दीवानी और

आपराधिक कार्रवाई की जाएगी। बैंक ने यह भी दोहराया कि वह पारदर्शिता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है और नियामकीय मानकों के अनुरूप सभी आवश्यक खुलासे किए जा रहे हैं।

मामले में पुलिस शिकायत दर्ज कर दी गई है और बैंक ने संबंधित जांच एजेंसियों को पूर्ण सहयोग देने की बात कही है। जिन खातों में संदिग्ध ट्रांजैक्शन पाए गए हैं, उनसे जुड़े लाभार्थी बैंकों को धनराशि फ्रीज करने का निर्देश दिया गया ताकि आगे किसी प्रकार का वित्तीय हस्तांतरण रोका जा सके। इसके साथ ही, पूरे प्रकरण की गहराई से जांच के लिए स्वतंत्र बाहरी एजेंसी से फॉरेंसिक ऑडिट कराया जा रहा है। इस ऑडिट के माध्यम से धन के प्रवाह की पूरी ट्रेल तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे यह पता लगाया जा सके कि रकम कहां से कहां गई और किसने किस स्तर पर हस्तक्षेप किया।

सूत्रों के अनुसार, इस अनियमितता की प्रकृति और पैमाने ने बैंकिंग जगत में चिंता बढ़ा दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि सरकारी खातों से जुड़े लेन-देन में अतिरिक्त सतर्कता, समय-समय पर आंतरिक और बाहरी ऑडिट और पारदर्शी लेखा-जोखा आवश्यक है। यदि ऐसे मामलों की समय पर पहचान और समाधान नहीं किया गया, तो यह न केवल बैंक की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है, बल्कि व्यापक वित्तीय प्रणाली में जमाकर्ताओं और निवेशकों के विश्वास पर भी असर डाल सकता है।

बैंक प्रबंधन का यह भी कहना है कि निलंबित कर्मचारियों की पहचान और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। बैंक ने आश्वासन दिया है कि जांच पूरी होने के बाद विस्तृत रिपोर्ट शेयर बाजार और सार्वजनिक मंच पर साझा की जाएगी। साथ ही, दोषियों के खिलाफ कठोर और नियामकीय दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के वरिष्ठ अधिकारी यह भी बता रहे हैं कि इस मामले ने बैंकिंग प्रणाली में नियंत्रण और निगरानी तंत्र को और मजबूत करने की जरूरत को उजागर किया है। विशेषज्ञों के अनुसार, बैंकिंग क्षेत्र में समय-समय पर होने वाले बड़े घोटाले ग्राहकों और निवेशकों के विश्वास को चुनौती देते हैं और इससे बचने के लिए आंतरिक नियंत्रण प्रणाली में सुधार और आधुनिक तकनीक का उपयोग अनिवार्य है।

इस मामले ने वित्तीय और बैंकिंग विशेषज्ञों में यह बहस भी शुरू कर दी है कि किस हद तक शाखा स्तर पर कर्मचारी नियंत्रण और अधिकारियों की निगरानी सुनिश्चित कर सकते हैं। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने स्पष्ट किया है कि यह अनियमितता केवल चंडीगढ़ शाखा के कुछ सरकारी खातों तक सीमित है और अन्य शाखाओं के संचालन या खाताधारकों के हितों पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा।

बैंकिंग विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार के मामलों में समय पर फॉरेंसिक ऑडिट, तकनीकी निगरानी और कर्मियों की जवाबदेही तय करने वाली प्रक्रियाओं का होना बेहद आवश्यक है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने भी अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लेते हुए आंतरिक जांच तेज कर दी है और सभी कानूनी, प्रशासनिक और नियामकीय उपायों को अपनाकर स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस घोटाले के खुलासे के साथ ही पूरे बैंकिंग क्षेत्र में सतर्कता बढ़ गई है। निवेशकों, जमाकर्ताओं और उद्योग विशेषज्ञों की निगाहें अब बैंक की कार्रवाई और जांच के निष्कर्षों पर टिकी हुई हैं। विशेषज्ञ यह भी मान रहे हैं कि इस घटना से सबक लेकर बैंकिंग प्रणाली को और पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की अनियमितता का दोबारा सामना न करना पड़े।

बैंक ने आश्वासन दिया है कि जांच पूरी होने के बाद दोषियों की पहचान कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी, और बैंक की वित्तीय स्थिति और संचालन में कोई असर नहीं पड़ेगा। फिलहाल, बैंक और जांच एजेंसियां मिलकर धन के प्रवाह का पूरा ब्यौरा जुटाने, खातों की जांच करने और जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान करने में जुटी हैं।

'SITEX 2026' में टेक्नोलॉजी का जलवा दो दिनों में 17 हजार से अधिक विज़िटर्स

जीएनएस)। सूरत एक बार फिर देश के टेक्सटाइल मानचित्र पर केंद्र में आ गया है। 'SITEX – सूरत इंटरनेशनल टेक्सटाइल एक्सपो 2026' ने पहले ही दो दिनों में जिस तरह खरीदारों, उद्योगपतियों और तकनीकी विशेषज्ञों को आकर्षित किया है, उसने इसे टेक्सटाइल उद्योग का महाकुंभ बना दिया है। 21, 22 और 23 फरवरी 2026 को आयोजित इस भव्य प्रदर्शनी को 17,410 से अधिक विज़िटर्स का प्रतिसाद मिल चुका है, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है और सूरत की औद्योगिक ताकत का प्रमाण भी।

इस एक्सपो का आयोजन सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री तथा सदर्न गुजरात चैंबर ट्रेड एंड इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट सेंटर द्वारा किया गया है। आयोजन स्थल सूरत इंटरनेशनल एग्ज़िबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर, सरसाना में सुबह 10 बजे से शाम 7 बजे तक चल रहे इस टेक्सटाइल महोत्सव में आधुनिक तकनीक और परंपरागत कौशल का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है।

चैंबर के अध्यक्ष निखिल मद्रासी ने बताया कि इस वर्ष की प्रदर्शनी में विश्वस्तरीय टेक्सटाइल मशीनरी का प्रदर्शन किया जा रहा है, जिसने उद्योग जगत का विशेष ध्यान आकर्षित किया है। एक्सपो का सबसे बड़ा आकर्षण दुनिया की पहली चार-शीट वाली हाई-स्पीड रैपियर जैक्वार्ड मशीन का लॉन्च रहा। यह मशीन उत्पादन क्षमता और डिज़ाइन की जटिलता दोनों में नई संभावनाएं खोलती है। इसके अतिरिक्त हाई-स्पीड एयरजेट मशीन, नई पोज़िशन प्रिंटर मशीनरी, पोज़िशन एम्ब्रॉयडरी मशीनरी तथा सर्कुलर निटिंग मशीनों की नवीनतम रेंज भी प्रदर्शित की गई है। इन तकनीकों से उत्पादन की गति, गुणवत्ता और लागत-प्रबंधन में उल्लेखनीय सुधार की उम्मीद जताई जा रही है।

पहले दिन शनिवार को 5,560 खरीदार और

विज़िटर एक्सपो पहुंचे, जबकि दूसरे दिन रविवार को यह संख्या बढ़कर 11,850 हो गई। इस तरह केवल दो दिनों में कुल 17,410 लोगों की उपस्थिति दर्ज की गई। यह आंकड़ा न केवल आयोजकों के लिए उत्साहवर्धक है, बल्कि यह संकेत भी देता है कि टेक्सटाइल उद्योग में नई तकनीक और नवाचार को लेकर व्यापक रुचि और जागरूकता बढ़ रही है। प्रदर्शकों का मानना है कि इस जबरदस्त भीड़ ने उन्हें सीधे ग्राहकों और व्यापारिक प्रतिनिधियों से जुड़ने का अवसर प्रदान किया, जिससे भविष्य के व्यापारिक अनुबंधों की संभावनाएं भी मजबूत हुई हैं।

देश के विभिन्न औद्योगिक केंद्रों से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि इस आयोजन में शामिल हुए। अहमदाबाद, मुंबई, कोलकाता, इंदौर, भीलवाड़ा, वाराणसी, हैदराबाद, नई दिल्ली, पुणे, कोयंबटूर, तिरुपुर, चेन्नई और बैंगलोर जैसे प्रमुख शहरों से आए उद्योगपतियों और व्यापारियों ने नई मशीनरी और तकनीकों का अवलोकन किया। इससे यह स्पष्ट है कि 'सिटेक्स 2026' राष्ट्रीय स्तर पर टेक्सटाइल उद्योग के लिए एक सशक्त नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म के रूप में उभर रहा है।

उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि यह एक्सपो केवल मशीनों की प्रदर्शनी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह टेक्सटाइल क्षेत्र के भविष्य की दिशा तय करने वाला मंच भी है। अत्याधुनिक तकनीक से लैस मशीनें उत्पादन क्षमता को कई गुना बढ़ाने में सक्षम हैं, वहीं गुणवत्ता में सुधार और समय की बचत से भारतीय टेक्सटाइल उत्पादों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा भी मजबूत होगी। सूरत, जो पहले से ही सिंथेटिक टेक्सटाइल और साड़ी निर्माण के लिए विश्वविख्यात है, अब तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में भी अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है।

व्यापारिक दृष्टि से भी यह आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। बड़ी संख्या में आए खरीदारों ने प्रदर्शकों के साथ विस्तृत चर्चा की और संभावित ऑर्डर बुकिंग की प्रक्रिया भी प्रारंभ हुई। इससे स्थानीय उद्योग को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है। होटल, परिवहन और सहायक सेवाओं को भी इस आयोजन से सकारात्मक प्रभाव मिला है।

'सिटेक्स 2026' ने यह साबित कर दिया है कि यदि उद्योग, संगठन और तकनीक का समन्वय सही दिशा में हो, तो सूरत जैसे शहर वैश्विक औद्योगिक मानचित्र पर अपनी अलग पहचान बना सकते हैं। टेक्सटाइल क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता और आधुनिक मशीनरी का यह संगम आने वाले समय में भारतीय उद्योग को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखता है।

टी20 वर्ल्ड कप 2026: भारत की करारी हार, दक्षिण अफ्रीका ने 76 रन से रौंदा, सेमीफाइनल की राह मुश्किल

जीएनएस)। नई दिल्ली। आईसीसी मेन्स टी20 वर्ल्ड कप 2026 का सुपर-8 चरण भारतीय क्रिकेट के लिए निराशाजनक साबित हो रहा है। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टीम इंडिया को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 76 रनों से करारी हार का सामना करना पड़ा। इस हार के साथ ही भारत का नेट रन रेट -3.80 हो गया है, और अब सेमीफाइनल की राह बेहद मुश्किल नजर आने लगी है। फैंस और विशेषज्ञ दोनों ही इस हार के बाद चिंता जताते हुए कह रहे हैं कि टीम को अब अपनी रणनीति और मानसिक तैयारी पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

मैच में पहले बल्लेबाजी का जिम्मा दक्षिण अफ्रीका ने उठाया। ओपनिंग के बाद मध्यक्रम ने भारतीय गेंदबाजों को कड़ी चुनौती दी। डेविड मिलर ने 63 रन की बेहतरीन पारी खेली और डेवाल्ड ब्रेविस ने 45 रन जोड़कर टीम को मजबूत स्थिति में रखा। दोनों बल्लेबाजों ने मिलकर 108 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी की, जिसने भारतीय गेंदबाजी को पूरी तरह दबाव में डाल दिया। इसके अलावा मार्को जानसेन ने अंत के ओवरों में तेजी से रन बनाए और दक्षिण अफ्रीका की टीम को निर्धारित 20 ओवर में 187 रन तक पहुंचा दिया। इस पारी में भारतीय गेंदबाजों की किफायती गेंदबाजी और विकेट लेने की कोशिश के बावजूद बड़ा अंतर नहीं बना पाए।

जब भारत की बारी बल्लेबाजी की आई, तो टीम पूरी तरह लड़खड़ा गई। ओपनर ईशान किशन, तिलक वर्मा और अभिषेक शर्मा जल्दी आउट हो गए। कप्तान सूर्यकुमार यादव महज 18 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इन शुरुआती झटकों ने भारतीय

टीम की स्थिति को और कठिन बना दिया। मध्यक्रम में शिवम दुबे ने 42 रन की मेहनती पारी खेली, लेकिन टीम को संभालने के लिए पर्याप्त सहयोग नहीं मिल सका। अन्य बल्लेबाजों का प्रदर्शन काफी कमजोर रहा, जिससे पूरी टीम निर्धारित 20 ओवर में सिर्फ 111 रन पर ऑल आउट हो गई।

गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह ने तीन विकेट लिए, लेकिन अकेले उनकी मेहनत टीम को हार से बचा नहीं सकी। केशव महाराज ने एक ओवर में तीन विकेट लेकर भारतीय बल्लेबाजों को पूरी तरह नियंत्रण से बाहर कर दिया। मार्को जानसेन ने चार विकेट लिए और टीम के महत्वपूर्ण विकेट जल्दी गिराने में अहम भूमिका निभाई। इस प्रदर्शन ने भारत को मैच में वापसी का कोई मौका नहीं दिया और दक्षिण अफ्रीका ने पूरी तरह से मैच पर कब्जा कर लिया।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह हार टीम इंडिया के लिए गंभीर चेतावनी है। सुपर-8 में हर मुकाबला निर्णायक साबित हो सकता है, और भारत को अब न केवल जीत दर्ज करनी है, बल्कि नेट रन रेट में सुधार करके प्रतियोगिता में अपनी जगह बनानी होगी। यदि अगले मैचों में टीम अंतर से जीत हासिल नहीं करती है, तो सेमीफाइनल में पहुंचना बेहद कठिन हो जाएगा।

विशेष रूप से बल्लेबाजों को अब अधिक जिम्मेदारी निभानी होगी। ईशान किशन, तिलक वर्मा और सूर्यकुमार यादव जैसे शीर्ष क्रम के खिलाड़ियों को न केवल स्थिरता दिखानी होगी, बल्कि तेज़ रन बनाकर विपक्षी टीम पर दबाव डालना होगा। मध्यक्रम और निचले क्रम के बल्लेबाजों को भी जल्दी विकेट गंवाने की स्थिति में टीम को संभालना सीखना होगा। वहीं गेंदबाजों को विरोधी टीम के बीच साझेदारियों को तोड़ने और ओवरों में रन नियंत्रण बनाए रखने पर अधिक ध्यान देना होगा।

इस हार का मानसिक प्रभाव भी टीम पर पड़ सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि कप्तान सूर्यकुमार यादव और टीम प्रबंधन को अब मानसिक मजबूती के साथ खिलाड़ियों को भरोसा देना होगा। टीम को एकजुट रहकर अगले मैचों में रणनीतिक बदलाव और साहसिक खेल दिखाना होगा। यदि भारतीय टीम इस हार से सबक लेती है और आगामी मुकाबलों में संयमित और आक्रामक खेल दिखाती है, तो सेमीफाइनल की उम्मीदें जीवित रह सकती हैं।

फैंस और विश्लेषक भी इस हार के बाद चर्चा कर रहे हैं कि टीम इंडिया को अब प्रत्येक ओवर, प्रत्येक गेंद और प्रत्येक साझेदारी पर विशेष ध्यान देना होगा। हार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सुपर-8 का कोई भी मैच आसान नहीं है और किसी भी छोटी चूक का खामियाजा भारी पड़ सकता है। भारतीय टीम के लिए यह समय रणनीति, अनुशासन और मानसिक दृढ़ता का परीक्षण है। अगले मुकाबलों में जीत के साथ-साथ रन रेट सुधारना, विपक्षी टीम के प्रमुख बल्लेबाजों को रोकना और संयमित बल्लेबाजी करना अब अनिवार्य हो गया है।

टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भारत की यह हार केवल अंक तालिका पर असर नहीं डालेगी, बल्कि टीम की मानसिकता, खेल की दिशा और आगामी रणनीति के लिए भी संकेत देगी। भारतीय टीम के लिए यह चुनौती है कि वह अगले मैचों में अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाए और टूर्नामेंट में अपनी उम्मीदों को जिंदा रखे। केवल सही रणनीति, मजबूत मानसिकता और संयमित खेल से ही टीम सुपर-8 में अपनी उम्मीदों को बरकरार रख सकती है और सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर सकती है।

इस हार के बाद फैंस की निगाहें अगले मुकाबलों पर टिकी हुई हैं। अगर भारतीय टीम समय रहते सुधार करती है और बल्लेबाजों तथा गेंदबाजों का प्रदर्शन संतुलित रहता है, तो टीम अभी भी टूर्नामेंट में वापसी कर सकती है। वहीं, अगर रणनीतिक और मानसिक कमजोरियों को दूर नहीं किया गया, तो भारत का सफर यहीं समाप्त हो सकता है। टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भारत की चुनौती अब बहुत बड़ी हो गई है, और अगले मुकाबलों में हर मैच अब निर्णायक बन गया है।

नरेंद्र मोदी ने एआई समिट पर कांग्रेस पर साधा निशाना

कहा- वैश्विक मंच को बनाया राजनीतिक अखाड़ा

जीएनएस)। मेरठ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मेरठ में दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ नमो भारत कॉरिडोर के शेष खंड और मेरठ मेट्रो सेवा का उद्घाटन करते हुए कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया। जनसभा में उन्होंने कहा कि नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित एआई समिट जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच को विपक्ष ने राजनीतिक प्रदर्शन का माध्यम बना दिया, जिससे देश की छवि को नुकसान पहुंचा। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि इस प्रकार के वैश्विक कार्यक्रम में देशहित सर्वोपरि होना चाहिए, न कि दलगत विरोध और राजनीतिक नाटकों का मंच बनाना।

प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि इस एआई समिट में 80 से अधिक देशों के प्रमुख और प्रतिनिधि शामिल हुए थे, साथ ही कई राष्ट्राध्यक्षों ने भी भागीदारी दी, जिससे भारत की वैश्विक साख मजबूत हुई। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने इस अवसर को "राजनीतिक अखाड़ा" बना दिया और अंतरराष्ट्रीय मंच का दुरुपयोग किया। मोदी ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन केवल तकनीकी और आर्थिक विकास को लेकर वैश्विक संवाद का माध्यम होने चाहिए, राजनीतिक विरोध का नहीं।

नमो भारत कॉरिडोर और मेरठ मेट्रो परियोजना के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री ने बताया कि मोदीपुरम से सराय काले खां तक लगभग 82 किमी का सफर अब केवल 55 मिनट में पूरा किया जा सकेगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि देश में पहली बार एक ही ट्रैक और प्लेटफॉर्म से मेट्रो और रैपिड रेल सेवा का संचालन किया जा रहा है, जिससे शहरी और अंतरशहरी आवागमन में सुधार होगा। इसके अलावा, सराय कालेखां, आनंद विहार, गाजियाबाद और मेरठ स्टेशनों पर रेल, मेट्रो और बस सेवाओं का एकीकरण किया गया है।

प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का उदाहरण देते हुए कहा कि नमो भारत परियोजना में कई महिलाओं ने सक्रिय योगदान दिया है, जिसे उन्होंने नारी शक्ति का प्रतीक बताया। इसके साथ ही उन्होंने चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न प्रदान करने का उल्लेख किया और कहा कि किसानों के हित में चल रही योजनाओं के तहत उत्तर प्रदेश के किसानों को अब तक लगभग 95 हजार करोड़ रुपये वितरित किए जा चुके हैं।

कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया और कहा कि डबल इंजन सरकार के सहयोग से राज्य में आधारभूत संरचना का विकास तेज़ी से हो रहा है। इस अवसर पर कई केंद्रीय और राज्य मंत्री, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद थे। प्रधानमंत्री ने मेट्रो में यात्रा कर छात्रों और युवाओं से संवाद भी किया और रैपिड रेल सेवा के शुरू होने से दिल्ली और मेरठ के बीच आवागमन में आने वाले समय में उल्लेखनीय कमी और व्यापार, रोजगार तथा शिक्षा के अवसरों में वृद्धि की संभावना के बारे में जानकारी दी।

प्रधानमंत्री मोदी का यह भाषण न केवल एआई समिट को लेकर कांग्रेस पर तीखा प्रहार था, बल्कि उन्होंने इसे राष्ट्रीय विकास और आधारभूत संरचना के महत्व को स्पष्ट करने का अवसर भी बनाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि वैश्विक मंचों पर भारत की छवि और साख को बनाए रखना देश की प्राथमिकता होनी चाहिए, और राजनीतिक विरोध के लिए इन आयोजनों का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।

प्रयागराज में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद और अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज, पॉक्सो अदालत के निर्देश पर जांच शुरू

जीएनएस)। प्रयागराज। जनपद प्रयागराज में पॉक्सो अधिनियम से जुड़े एक गंभीर मामले में झूंसी पुलिस ने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सहित अन्य आरोपितों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह कार्रवाई विशेष पॉक्सो न्यायालय के निर्देश के अनुपालन में की गई, जिसके तहत पुलिस को वादी की शिकायत पर तत्काल मुकदमा दर्ज करने और विधिक रूप से जांच सुनिश्चित करने का आदेश मिला था।

मामले की शिकायत आशुतोष ब्रह्मचारी नामक व्यक्ति ने दी है। शिकायत के अनुसार, वह मथुरा जनपद के वृंदावन स्थित श्री तुलसी कुंज, छत्तीसगढ़ पीठ से जुड़े हैं। अपनी तहरीर में उन्होंने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद, मुकुंदानंद ब्रह्मचारी (चमोली, उत्तराखंड) और तीन अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ आरोप लगाए

हैं। पुलिस ने इस शिकायत के आधार पर एफआईआर दर्ज कर मामले की संवेदनशील जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार, दर्ज एफआईआर में भारतीय दंड संहिता 2023 की धारा 351(3) के साथ-साथ लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 (पॉक्सो एक्ट) की छह अलग-अलग धाराएं शामिल की गई हैं। अधिकारियों ने बताया कि आरोपों की प्रकृति को देखते हुए मामले की जांच पूरी संवेदनशीलता, विधिक मानकों और कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करते हुए की जा रही है।

विशेष पॉक्सो अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट निर्देश दिए थे कि झूंसी थाने को वादी की शिकायत के आधार पर तत्काल मुकदमा दर्ज करना होगा और जांच की पूरी प्रक्रिया सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अनुपालन में रविवार को केस दर्ज किया गया और पुलिस ने संबंधित आरोपितों की पहचान तथा साक्ष्य संकलन की प्रक्रिया शुरू कर दी।

पुलिस ने कहा कि जांच के दौरान सभी पक्षों के बयान लिए जाएंगे और अन्य आवश्यक विधिक औपचारिकताएं पूरी की जाएंगी। अधिकारियों ने यह भी अपील की है कि मामले में निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले सभी नागरिक संयम बरतें और जांच पूरी होने तक किसी प्रकार की अटकलों पर भरोसा न करें।

इस एफआईआर के दर्ज होने के साथ ही प्रयागराज में यह मामला कानून और न्याय के दायरे में पहुंच गया है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि जांच के दौरान प्राप्त तथ्यों के आधार पर आगे की सख्त कार्रवाई की जाएगी और जिम्मेदार व्यक्तियों को कानूनी रूप से जवाबदेह ठहराया जाएगा। यह मामला स्थानीय प्रशासन और पुलिस के लिए अत्यंत संवेदनशील बताया जा रहा है, और पूरे क्षेत्र में कानूनी प्रक्रिया के प्रति जनता का ध्यान भी केंद्रित है।

गुजरात में जल्द उपलब्ध होगा सर्पदंश से होने वाली मौतों को कम करने के लिए स्थानीय सांपों के जहर से बना एंटीवेनम

▸▸ गुजरात सरकार द्वारा धरमपुर में स्थापित स्नेक रिसर्च इंस्टीट्यूट ने हाल ही में सांपों के जहर की नीलामी की, जिसमें जहर की उच्च गुणवत्ता के कारण उम्मीद से अधिक दाम मिले

▸▸ सर्प अनुसंधान केंद्र गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांपों की प्रजातियों से जहर एकत्रित करके एंटीवेनम तैयार करने पर ध्यान केंद्रित करता है

▸▸ भारत सर्पदंश से होने वाली मौतों को रोकने के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना लॉन्च करने वाला दुनिया का पहला देश

▸▸ केंद्र सरकार ने मार्च-2024 में 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' लॉन्च किया

जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम करने के लिए गुजरात सरकार के पास जल्द ही राज्य में पाए जाने वाले जहरीले सांपों से ही बना एंटीवेनम उपलब्ध होगा। सर्पदंश से होने वाली मौतों को कम करने की दिशा में यह कदम काफी प्रभावी सिद्ध होगा।

उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार ने दक्षिण गुजरात के वलसाड जिले के धरमपुर शहर में सर्प अनुसंधान केंद्र (स्नेक रिसर्च इंस्टीट्यूट-एसआरआई) की स्थापना की है। इस संस्थान में गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में पाए जाने वाले जहरीले सांपों को लाया जाता है। अभी इस संस्थान में लगभग 460 जहरीले सांपों को रखा गया है। सांपों की देखभाल और जहर निकालने की प्रक्रिया में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की गाइडलाइन का पालन किया जाता है। सांप से निकाले गए जगह को आधुनिक टेक्नोलॉजी के जरिए प्रोसेस कर पाउडर में बदला जाता है। इस पाउडर की नीलामी कर उसे लाइसेंस वाले एंटीवेनम बनाने वाले निर्माताओं को दिया जाएगा। गुजरात सरकार निर्माताओं द्वारा पाउडर से बनाए गए एंटीवेनम को खरीदेगी और राज्य के विभिन्न हॉस्पिटलों को सर्पदंश के उपचार के लिए एंटीवेनम की आपूर्ति करेगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य में सर्पदंश से होने वाली मौतों की रोकथाम के लिए गहन उपाय किए जा रहे हैं और इसके लिए गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांपों से ही प्राप्त जहर से एंटीवेनम बनाने का अहम कार्य प्रगति पर है।

सर्प अनुसंधान केंद्र ने हाल ही में जहरीले सांपों के लायोफिलाइज्ड (पाउडर रूप में) की ई-नीलामी की

सर्प अनुसंधान केंद्र ने हाल ही में गुजरात में पाए जाने वाले चार प्रमुख जहरीले सांपों की प्रजातियों- इंडियन कोबरा, कॉमन क्रेट, रसेल्स वाइपर और सॉ-स्केल्ड वाइपर- के लायोफिलाइज्ड (पाउडर स्वरूप में) जहर की ई-नीलामी की। इस नीलामी में लाइसेंस वाले एंटीवेनम बनाने वाले निर्माताओं ने हिस्सा लिया। इस संस्थान में रखे और संभाले गए जहरीले सांपों से निकाले गए जहर की गुणवत्ता इतनी अच्छी थी कि इस जहर के लिए अनुमान से भी अधिक ऊंचे दाम मिले।

सर्प अनुसंधान केंद्र के एक उच्च अधिकारी ने इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए बताया, "इंडियन कोबरा के जहर के लिए प्रति ग्राम 40,000 रुपए का आधार मूल्य निर्धारित किया गया था, लेकिन हमें प्रति ग्राम 44,000 रुपए प्राप्त हुए। सॉ-स्केल्ड वाइपर के जहर के लिए प्रति ग्राम 50,000 रुपए के आधार मूल्य के मुकाबले हमें 56,500 रुपए मिले। दूसरी प्रजातियों के लिए भी बेहतर प्रतिक्रिया के साथ ऊंचे दाम मिले।"

सर्प अनुसंधान केंद्र के उपाध्यक्ष डॉ. डी.सी. पटेल ने कहा, "सर्पदंश के उपचार में मुख्य चुनौती अलग-अलग

क्षेत्र के हिसाब से सांप के जहर का बदल जाना है। कई बार दूर-सुदूर क्षेत्र से लाए गए जहर से बनाया गया एंटीवेनम कम प्रभावी सिद्ध होता है। इस समस्या के समाधान के लिए गुजरात सरकार ने सर्प अनुसंधान केंद्र की स्थापना की है और यहां गुजरात में पाए जाने वाले जहरीले सांप की प्रजातियों से जहर एकत्रित कर एंटीवेनम तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हमें उम्मीद है कि गुजरात में पकड़े गए सांप के जहर से बने एंटीवेनम सर्पदंश के उपचार में और अधिक कारगर साबित होंगे।"

डॉ. डी.सी. पटेल एक जनरल सर्जन हैं, और सर्पदंश के उपचार में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। वे धरमपुर में एक हॉस्पिटल चलाते हैं और सर्पदंश पीड़ितों का उपचार करते हैं। सर्पदंश के उपचार में उनकी सफलता की दर 98 फीसदी से अधिक है। उन्होंने पिछले 35 वर्षों के दौरान सांप के डसने के हर केस का दस्तावेजीकरण भी किया है।

डॉ. पटेल ने आगे कहा, "यहां रखे गए सांपों से प्राप्त किया गया जहर उच्च गुणवत्ता वाला है, क्योंकि हमारा संस्थान डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों का अनुसरण करता है। संस्थान द्वारा मुहैया कराए गए जहर से तैयार एंटीवेनम उपलब्ध होने से राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों में कमी आने की आशा है।"

सर्प अनुसंधान केंद्र को आगामी समय में विश्व स्तरीय संस्थान बनाने की योजना

सर्प अनुसंधान केंद्र (एसआरआई), गांधीनगर स्थित गुजरात फॉरेस्ट्री रिसर्च फाउंडेशन (जीएफआरएफ) के अधीन कार्य करता है। वहीं, जीएफआरएफ, गुजरात सरकार के वन एवं पर्यावरण विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था है। सर्प अनुसंधान केंद्र राज्य में सांप के डसने से होने वाली मौतों को कम करने के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण और जनजागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करता है।

सर्प अनुसंधान केंद्र को आगामी समय में विश्व स्तरीय संस्थान बनाने की योजना बनाई जा चुकी है। वलसाड जिला कलेक्टर ने इस संस्थान के स्थायी परिसर के निर्माण और उससे संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के लिए 2.25 हेक्टेयर भूमि आवंटित की है। इस संस्थान को विश्व स्तरीय केंद्र के तौर पर विकसित करने के लिए 11.68 करोड़ रुपए का प्रस्ताव गुजरात सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

देश में एंटीवेनम बनाने के लिए सांप से जहर निकालने का काम अभी तमिलनाडु स्थित इरुला स्नेक कैचर्स इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. करती है। धरमपुर स्थित सर्प अनुसंधान केंद्र अब इस कार्य को करने वाला देश का दूसरा संस्थान बन गया है।

भारत सर्पदंश एन्वेनोमिंग के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना बनाने वाला दुनिया का पहला देश

भारत सर्पदंश एन्वेनोमिंग के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना बनाने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने मार्च 2024 में 'नेशनल एक्शन प्लान फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ स्नेकबाइट एन्वेनोमिंग (एनएपी-एसई)' यानी सर्पदंश से फैलने वाले जहर की रोकथाम और नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना लॉन्च की। यह व्यापक फ्रेमवर्क राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों को अपनी कार्य योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन देता है। इसका मुख्य उद्देश्य 2030 तक सांप के डसने से होने वाली मौतों और दिव्यांगता को 50 फीसदी तक कम करना है। गुजरात का सर्प अनुसंधान केंद्र इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सर्पदंश के उपचार के लिए डॉक्टरों को प्रशिक्षण

सर्प अनुसंधान केंद्र लोगों में सर्पदंश के बारे में जागरूकता फैलाने का काम भी करता है। अब तक लगभग 300 से अधिक स्थानीय स्नेक रेस्क्यूअर्स (सांप बचावकर्मी) और 23 जिलों में 1495 से अधिक डॉक्टरों एवं मेडिकल ऑफिसरों को सर्पदंश प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। ये प्रयास, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में तत्काल प्रतिक्रिया एवं उपचार के परिणामों में सुधार लाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सर्प अनुसंधान केंद्र (धरमपुर) जागरूकता कार्यक्रम चलाता है। शिक्षकों को प्रशिक्षण देता है और स्थानीय पंचायतों के साथ मिलकर सांप से जुड़ी गलत धारणाओं को दूर करने तथा सुरक्षित तरीकों को बढ़ावा देने का काम करता है। संस्थान ने 'स्नेक्स ऑफ वलसाड' नामक फोटोग्राफिक फील्ड गाइड प्रकाशित की है और इस संदर्भ में एक वृत्तचित्र भी तैयार किया है।

कठाणा - वासद खंड में विशेष Rail One ऐप अभियान

जीएनएस)। वडोदरा मंडल के कामर्शियल विभाग द्वारा कठाणा – वासद खंड में RailOne ऐप के प्रचार एवं डिजिटल जागरूकता के उद्देश्य से हाल ही में एक विशेष अभियान का आयोजन किया गया। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, वडोदरा मंडल श्री नरेन्द्र कुमार के निर्देशन में आयोजित इस अभियान के दौरान कठाणा से वासद स्टेशन तक यात्रा कर रहे यात्रियों से कामर्शियल विभाग के कर्मचारियों द्वारा प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर उन्हें RailOne ऐप डाउनलोड करने एवं पंजीकरण की प्रक्रिया संबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस अभियान के अंतर्गत इस खंड में अधिकांश यात्रियों के MST (मासिक सीजन टिकट) धारक होने तथा अनेक यात्रियों के पास कीपैड मोबाइल होने जैसी व्यावहारिक चुनौतियों के बावजूद 07 यात्रियों का सफलतापूर्वक ऐप डाउनलोड एवं पंजीकरण कराया गया। वडोदरा मंडल द्वारा डिजिटल टिकटिंग को प्रोत्साहित करने एवं यात्रियों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने के उद्देश्य से इस प्रकार के अभियान का संचालन नियमित रूप से समय-समय पर किया जाता है।

सूरत के लिंबायत जोन के इंजीनियर विपुल गणेशवाला के खिलाफ एसीबी की शिकायत के बाद भूमिगत हो गए

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत सूरत नगर निगम के लिंबायत जोन में कार्यकारी अभियंता के पद पर कार्यरत विपुल गणेशवाला और उनके साथी पत्रकार परवाना के खिलाफ एसीबी ने मामला दर्ज किया है। परवाना 4 लाख रुपये नकद लेकर फरार हो गया है और विपुल गणेशवाला भी उसके साथ ही फरार है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

सदर गणेशवाला के बारे में कहा जाता है कि विपुल गणेशवाला, जिस पर पत्रकार इस्माइल उर्फ परवाना को बिचौलिए के रूप में इस्तेमाल करके, उससे पहले सेवा दे चुकी महिला कार्यकारी अभियंता द्वारा ध्वस्त किए गए सभी अवैध ढांचों को ध्वस्त करवाने के लिए पैसे कमाने का आरोप है, पर भवन मालिकों से बड़ी रकम की उगाही करने का भी आरोप है।

एक तरफ तो शहर में अवैध इमारतों के निर्माण को लेकर तक्षशिला जैसा घोटाला चल रहा है, वहीं दूसरी तरफ इससे सबक लेने के बजाय, मनमाने ढंग से बन रही इन अवैध संपत्तियों को पत्रकारों के हाथों में सौंपकर अपने स्वार्थों को पूरा किया जा रहा है। कहा जाता है कि भ्रष्ट इंजीनियर गणेशवाला के शासनकाल में लिंबायत इलाके में करीब 40 से 50 अवैध शिक्षण भवन बनाए गए थे, जो पत्रकार परवाना और गणेशवाला की मिलीभगत से फल-फूल रहे हैं।

यह भी जानकारी मिली है कि लिंबायत, नवगाम और दिंडोली के पार्षदों की लापरवाही या डर के कारण कई लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ा है। इतना ही नहीं, गणेशवाला ने इस महानगर के बौद्धिक माफिया की तरह करोड़ों रुपये का भ्रष्टाचार करके करोड़ों की संपत्ति और गाड़ियां हासिल कर ली हैं। इसके अलावा, गणेशवाला के बेटे की शादी पर भी डेढ़ करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। अगर नगर निगम के अधिकारी जागरूक और सक्रिय होते, तो गणेशवाला ऐसा करने की हिम्मत नहीं करता। यहां सवाल उठता है कि इस क्षेत्र के पार्षदों को किसका डर सता रहा था कि वे चुप रहे?

इतना ही नहीं, यह मानना भी गलत नहीं होगा कि लिंबायत इलाके में रहने वाला एक साधारण दो कमरों वाला रसोईघर का मालिक भी गणेशवाला की गतिविधियों से अच्छी तरह वाकिफ होगा। हद तो तब पार हो गई जब लिंबायत के पूर्व भाजपा पार्षद को भी निर्माण कार्य के लिए उत्पीड़न और लूट का सामना करना पड़ा और उन्हें अपनी संपत्ति बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे ज्यादा शर्मनाक और क्या हो सकता है? विश्वसनीय सूत्रों से यह भी पता चला है कि गणेशवाला ने लिंबायत में अवैध निर्माणों की जानकारी हासिल करने के लिए कई बिचौलियों को काम पर रखा है।

इस प्रकार, धन की अपनी भूख को शांत करने के लिए, गणेशवाला ने अंततः पाप का घड़ा भर दिया और कानूनी दस्तावेजों के साथ मौजूदा घरों को भी ध्वस्त करने के नोटिस जारी करके और संपत्ति मालिकों से बड़ी रकम वसूल करके उसे फाड़ डाला।

फिर बस इतना ही कहना काफी है कि एसीबी को विपुल गणेशवाला की आय, उनके बेटे की शादी पर करोड़ों रुपये के खर्च, बैंक लॉकर, नकदी और गहने, घर, वाहन आदि की गहन जांच करके एक मिसाल कायम करनी चाहिए और इस भ्रष्ट व्यक्ति को आजीवन कारावास की सजा देनी चाहिए। तभी भ्रष्टाचार का अंत होगा।

भारत–अमेरिका व्यापार समझौते पर विरामः वैश्विक टैरिफ अनिश्चितता के बीच रणनीतिक संतुलन की तलाश

जीएनएस)। भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित अंतरिम व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने की दिशा में चल रही प्रक्रिया को फिलहाल विराम लग गया है। दोनों देशों के मुख्य वार्ताकारों की वह महत्वपूर्ण बैठक, जो 23 से 26 फरवरी के बीच वॉशिंगटन डी.सी. में आयोजित होने वाली थी, अब टाल दी गई है। यह निर्णय ऐसे समय में लिया गया है जब वैश्विक व्यापार वातावरण में टैरिफ नीतियों को लेकर अनिश्चितता बढ़ गई है और दोनों देश अपने-अपने रणनीतिक हितों का सावधानीपूर्वक आकलन कर रहे हैं। यह घटनाक्रम केवल एक बैठक के स्थगन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक व्यापार संतुलन, आर्थिक कूटनीति और बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों की जटिलता को भी दर्शाता है।

भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध पिछले एक दशक में उल्लेखनीय रूप से मजबूत हुए हैं। वित्त वर्ष 2024–25 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 186 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि दोनों अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन चुका है, जबकि भारत भी अमेरिकी कंपनियों के लिए तेजी से उभरता हुआ बाजार है। इस संदर्भ में प्रस्तावित अंतरिम व्यापार समझौता दोनों देशों के लिए न केवल आर्थिक बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस समझौते का उद्देश्य व्यापार में मौजूद बाधाओं को कम करना, टैरिफ दरों को संतुलित करना और निवेश को प्रोत्साहित करना है। विशेष रूप से प्रौद्योगिकी, विनिर्माण, ऊर्जा, कृषि और सेवा क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने की दिशा में यह समझौता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत के लिए यह समझौता निर्यात को बढ़ावा देने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी स्थिति को और मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है, जबकि अमेरिका के लिए यह एशियाई क्षेत्र में अपनी आर्थिक उपस्थिति को मजबूत करने का एक प्रभावी माध्यम है।

हालांकि, हाल के घटनाक्रमों ने इस प्रक्रिया को जटिल बना दिया है। अमेरिकी प्रशासन द्वारा आयात शुल्क को 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने की घोषणा ने वैश्विक व्यापार वातावरण में नई अनिश्चितता पैदा कर दी है।

इंग्लैंड के वेस्ट मिडलैंड्स के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की

▸▸ इंडिया-यूके ट्रेड डील के बाद पहली गुजरात यात्रा

▸▸ हायर एजुकेशन, ग्रीन इकोनॉमी, ईवी-स्किल डेवलपमेंट, स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा एआई-एडवांस मैन्युफैक्चरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की तत्परता दर्शाई

▸▸ सहयोग के क्षेत्रों में अधिक समन्वय के लिए गुजरात-वेस्ट मिडलैंड्स की संयुक्त कार्य समिति का गठन किया जाएगा

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया के देशों के लिए भारत एक विश्वसनीय मित्र के रूप में उभरा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को इंग्लैंड के वेस्ट मिडलैंड्स कम्बाइंड अथॉरिटी के वेस्ट मिडलैंड्स के महापौर श्री रिचर्ड पार्कर तथा उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने गांधीनगर में शिष्टाचार भेंट की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुई यूके-इंडिया ट्रेड डील के बाद यह प्रतिनिधिमंडल पहली बार गुजरात के दौरे पर आया है। इस भेंट के दौरान मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने विशेष रूप से हायर एजुकेशन, ग्रीन इकोनॉमी और ईवी, स्किल डेवलपमेंट, एआई- एडवांस मैन्युफैक्चरिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की तत्परता व्यक्त की।

उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ गुजरात में 2030 में आयोजित होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए स्पोर्ट्स इकोसिस्टम और स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में यूके की विशेषज्ञता का योगदान देने के संबंध में फलदायी चर्चाएं की। इतना ही नहीं, इन गेम्स के आयोजन के संदर्भ में मुख्यमंत्री और गुजरात के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल को वेस्ट मिडलैंड्स की यात्रा पर आने का आमंत्रण भी दिया।

इस बैठक में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व के देशों के लिए भारत एक विश्वसनीय मित्र के रूप में उभरा है। गुजरात को उनके नेतृत्व का जो लाभ मिला है उसका उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि 2003 की वाइब्रेंट समिट से गुजरात ग्लोबल डेस्टिनेशन फॉर इन्वेस्टमेंट बना है और उनके मार्गदर्शन में गुजरात ने पॉलिसी ड्रिवन स्टेट के रूप में विभिन्न पॉलिसी मेकिंग से सेक्टर स्पेसिफिक ग्रोथ का विजन अपनाया है।

इस संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि विकसित भारत 2047 के प्रधानमंत्री के लक्ष्य में भी

गुजरात ग्रीन ग्रोथ सहित उभरते क्षेत्रों से नेतृत्व लेने के लिए तैयार है। यूके को सहभागीता के जिन क्षेत्रों में रुचि हो, उनमें गुजरात सरकार पूर्ण सहयोग देने के लिए उत्सुक है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने ऐसे सेक्टर्स को एक्सप्लोर करने और पारस्परिक विकास की संभावनाओं को गति देने के लिए गुजरात सरकार और वेस्ट मिडलैंड्स के अधिकारियों की एक संयुक्त कार्य समिति बनाने तथा उसके लिए संपर्क सूत्र के रूप में इंडेक्स-बी को नोडल एजेंसी नियुक्त करने का सुझाव दिया। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को वाइब्रेंट गुजरात रीजनल समिट की आगामी कड़ी तथा 2027 की वाइब्रेंट समिट में शामिल होने का आमंत्रण भी दिया।

इस उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल में वेस्ट मिडलैंड्स ग्रोथ कंपनी के सीईओ श्री नील रामी, ईओएन एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी श्री विजय टांक, यूनिवर्सिटी ऑफ वॉरविक इनोवेशन डिस्ट्रिक्ट के कार्यकारी अध्यक्ष श्री ग्रेग क्लार्क, बर्मिंघम यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री डेविड, जीईडीयू ग्लोबल एजुकेशन के प्रबंध निदेशक केविन मैककॉल, एस्टन यूनिवर्सिटी के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी, यूनिवर्सिटी के उप कुलपति मार्क ली, यूकेआईएफएफ इंडिया ग्लोबल फोरम के विलियम केन तथा मनोज लाडवा शामिल रहे।

इस शिष्टाचार भेंट अवसर पर उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे तथा इंडेक्स बी के एम.डी. श्री केयूर संपत भी उपस्थित रहे।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीनजी ने अहमदाबाद के खाड़िया स्थित विरासत (हेरिटेज) के प्रतीक देसाई की पोल में बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 131वां एपिसोड देखा

▸▸ जिस स्थान से भाजपा की नींव मजबूत होना शुरू हुई, ऐसे हेरिटेज क्षेत्र खाड़िया में उपस्थित रहकर बूथ कार्यकर्ताओं के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव यादगार और अविस्मरणीय है
- श्री नितिन नवीन जी

▸▸ पोल में उपस्थित निवासियों और कार्यकर्ताओं के परिजनों से बड़े उत्साह और उमंग के साथ मुलाकात करते श्री नितिन नवीन जी

▸▸ श्री नितिन नवीनजी ने सफाई कामगार भाई को अपना खेस पहनाकर उनके सेवा कार्य की प्रशंसा की और सम्मानित किया

▸▸ देसाई की पोल के घरों के द्वारों पर खड़े नागरिकों ने गगनभेदी जयघोष के साथ श्री नितिन नवीन जी का अभिवादन किया

▸▸ बूथ अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष एक साथ बैठकर इस तरह कार्यक्रम देखें, यह केवल भाजपा में ही संभव है
- श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा

जीएनएस)। गुजरात प्रदेश भाजपा मीडिया विभाग की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने आज अहमदाबाद के खाड़िया स्थित विरासत के उत्तम प्रतीक देसाई की पोल में भारतीय जनता पार्टी के बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदीजी के जनसंवाद कार्यक्रम 'मन की बात' का 131वां एपिसोड देखा। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री बी.एल. संतोष जी, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री रत्नाकर जी और कर्णावती महानगर भाजपा अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह उपस्थित रहे।

इस अवसर पर श्री नितिन नवीन जी ने बूथ कार्यकर्ताओं के साथ संवाद करते हुए कहा कि, आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी की भूमि पर, जहाँ भाजपा की नींव रखी गई, ऐसे हेरिटेज क्षेत्र खाड़िया में उपस्थित रहकर बूथ कार्यकर्ताओं के साथ 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव यादगार और अविस्मरणीय है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम का संवाद हमेशा प्रेरणादायी होता है। 'मन की बात' कार्यक्रम के समापन के बाद श्री नितिन नवीन जी ने पोल में उपस्थित निवासियों और कार्यकर्ताओं के परिजनों से बड़े उत्साह के साथ मुलाकात की और नागरिकों के अभिवादन को स्वीकार किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने वहां उपस्थित एक सफाई कामगार भाई को अपना खेस पहनाकर उनके सेवा कार्य की सराहना की और उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने देसाई की पोल के

घरों के दरवाजों पर उनका स्वागत करने के लिए खड़े बुजुर्गों को नमन कर उनके आशीर्वाद लिए। उपस्थित जनमेदनी ने श्री नितिन नवीन जी के इस विनम्र और सरल व्यवहार का गगनभेदी जयघोष के साथ स्वागत किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा ने कहा कि; बूथ अध्यक्ष, वार्ड अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय अध्यक्ष एक साथ बैठकर इस प्रकार कार्यक्रम देखें, यह केवल भारतीय जनता पार्टी में ही संभव है। आज हेरिटेज सिटी अहमदाबाद की ऐतिहासिक पोल संस्कृति के सानिध्य में बूथ कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम देखने का अनुभव आनंददायी और कार्यकर्ताओं से संवाद करने का एक सुनहरा अवसर रहा।